CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2014 with Solution PDF-Set 2/1/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 6, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

अचल खड़े रहते जो ऊँचा शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में ।
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर ।
आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी ही तरुणाई,
नए जन्म की श्वास तुम्हारे अंदर जगकर है लहराई ।
आज विगत युग के पतझर पर तुमको नव मधुमास खिलाना,
नवयुग के पृष्ठों पर तुमको है नूतन इतिहास लिखाना ।
उठो राष्ट्र के नवयौवन तुम दिशा-दिशा का सुन आमंत्रण,
जगो, देश के प्राण जगा दो नए प्रात का नया जागरण ।
आज विश्व को यह दिखला दो हममें भी जागी तरुणाई,
नई किरण की नई चेतना में हमने भी ली अँगड़ाई ।। [5 अंक]

1(क). मार्ग की रुकावटों को कौन तोड़ता है और कैसे ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में साहसी, सहनशील और दृढ़ युवकों की पहचान उनके निरंतर आगे बढ़ने से होती है।
- निर्झर की उपमा युवकों के अविराम प्रयास और बाधाओं को हटाकर मार्ग बनाने को स्पष्ट करती है।

चरण 1: युवकों की पहचान करें कवि उन युवकों का उल्लेख करता है जो तूफानों में भी सिर ऊँचा किए अचल खड़े रहते हैं। उनके भीतर सहनशीलता और दृढ़ता रहती है।

चरण 2: बाधा तोड़ने का ढंग समझें ऐसे युवक निर्झर की तरह निरंतर आगे बढ़ते हैं। वे कठिनाइयों से घबराकर रुकते नहीं, बल्कि अपने धैर्य, साहस और दृढ़ संकल्प से मार्ग की रुकावटों को पार कर लेते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष साहसी और दृढ़ युवा निर्झर के समान निरंतर आगे बढ़कर मार्ग की रुकावटों को तोड़ते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कौन के लिए दृढ़ युवा और कैसे के लिए निर्झर जैसा अविराम प्रयास अवश्य लिखें।

1(ख). नवयुवक प्रगति के नाम को कैसे सार्थक करते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि प्रगति का संबंध कठिन मार्ग पर आगे बढ़ने से जोड़ता है।
- युवावस्था की शक्ति तभी सार्थक है जब वह दुर्गम परिस्थितियों का सामना करे।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति पहचानें काव्यांश की पंक्ति 'प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर प्रश्न का आधार है। इसमें दुर्गमता कठिन परिस्थितियों की ओर संकेत करती है।

चरण 2: प्रगति का स्वरूप स्पष्ट करें नवयुवक संकटों से बचकर सुविधाजनक जीवन नहीं चुनते। वे सहनशीलता और दृढ़ता से बाधाएँ पार करते हुए आगे बढ़ते हैं। इस प्रकार उनकी सक्रियता से विकास का मार्ग खुलता है।

चरण 3: निष्कर्ष नवयुवक कठिनाइयों का साहस और दृढ़ता से सामना करते हुए निरंतर आगे बढ़कर प्रगति के नाम को सार्थक करते हैं।

त्वरित सुझाव: दुर्गमता पर चलकर शब्दों को आधार बनाकर संघर्ष और आगे बढ़ने का संबंध समझाएँ।

1(ग). 'विगत युग के पतझर' से क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पतझर यहाँ प्राकृतिक ऋतु के साथ पुराने युग की जड़ता और निराशा का प्रतीक है।
- नव मधुमास का उल्लेख पुराने पतन के स्थान पर नया उत्साह और विकास लाने की अपेक्षा स्पष्ट करता है।

चरण 1: पतझर का संदर्भ देखें कवि विगत युग के पतझर पर नव मधुमास खिलाने को कहता है। पतझर में हरियाली और फूलों का अभाव होता है; इसलिए यहाँ यह उजाड़ तथा उत्साहहीन दशा का संकेत बनता है।

चरण 2: प्रतीक का आशय बताएँ विगत युग का पतझर बीते समय की निराशा, जड़ता और अवनति को व्यक्त करता है। युवा शक्ति को इसी दशा को बदलकर देश में नई चेतना और आशा जगानी है।

चरण 3: निष्कर्ष विगत युग के पतझर का आशय बीते युग की निराशा, जड़ता और अवनति से है।

त्वरित सुझाव: पतझर का केवल ऋतु वाला अर्थ न दें; नव मधुमास के विरोध से उसका प्रतीकात्मक आशय निकालें।

1(घ). कवि देश के नवयुवकों का आह्वान क्यों कर रहा है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि देश के भविष्य की आशा युवा पीढ़ी में देखता है।
- आह्वान का उद्देश्य नवजागरण और नए युग के निर्माण में युवकों को सक्रिय करना है।

चरण 1: देश की आशा पहचानें काव्यांश में युवकों की तरुणाई को देश की भावी आशा कहा गया है। उनमें नई चेतना, ऊर्जा और नए जीवन की संभावना दिखाई गई है।

चरण 2: आह्वान का प्रयोजन बताएँ कवि चाहता है कि युवक जागें और देश के प्राणों को जगा दें। वे पुराने युग की निराशा दूर करें, नए युग का निर्माण करें और अपने कर्म से नया इतिहास लिखें।

चरण 3: निष्कर्ष कवि नवयुवकों का आह्वान देश में नई चेतना जगाने, निराशा दूर करने और नए युग का इतिहास रचने के लिए कर रहा है।

त्वरित सुझाव: आह्वान का कारण बताते समय देश की आशा और युवकों से अपेक्षित नवजागरण दोनों जोड़ें।

1(ङ). कविता का मूल संदेश अपने शब्दों में लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश युवाओं को साहस, सहनशीलता और दृढ़ता के साथ कर्म करने की प्रेरणा देता है।
- व्यक्तिगत ऊर्जा को राष्ट्र के नवजागरण और विकास में लगाना कविता का केंद्रीय विचार है।

चरण 1: मुख्य भावों को जोड़ें आरंभ में कठिनाइयों के बीच अडिग रहने वाले युवकों का गुणगान है। आगे कवि उन्हें देश की भावी आशा बताकर पुराने पतझर के स्थान पर नया मधुमास लाने को कहता है।

चरण 2: साझा संदेश व्यक्त करें इन भावों से स्पष्ट है कि युवा पीढ़ी को संकटों से घबराना नहीं चाहिए। उसे जागरूक होकर अपनी शक्ति का उपयोग देश की प्रगति में करना चाहिए और नई चेतना से उज्ज्वल भविष्य बनाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का संदेश है कि युवक साहस और दृढ़ता से बाधाओं को पार करें तथा नई चेतना जगाकर देश का उज्ज्वल भविष्य बनाएँ।

त्वरित सुझाव: मूल संदेश में केवल जागने की बात न लिखें; संघर्ष, कर्म और राष्ट्र की प्रगति का संबंध भी बताएँ।

2. नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं । अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी । महाभारत में देश के प्राय: अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे । मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था । विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है । आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं । ज़िन्दगी की दो ही सूरतें हैं । एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए । दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है । इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िन्दगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते । और कौन कहता है कि पूरी ज़िन्दगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनन्द नहीं है ? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है ।

साहस की ज़िन्दगी सबसे बड़ी ज़िन्दगी होती है । ऐसी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है । साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं । जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है । अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है । क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं । [15 अंक]

2(क). गद्यांश में अकबर का उदाहरण क्यों दिया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का मूल विचार है कि संकट और कठिनाइयाँ मनुष्य की बड़ी उपलब्धियों की तैयारी करते हैं।
- अकबर का प्रसंग इस सामान्य विचार का समर्थन करने वाला उदाहरण है।

चरण 1: उदाहरण के तथ्य पहचानें लेखक बताता है कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में अत्यंत अभाव के समय हुआ था। उस समय उसके पिता के पास एक कस्तूरी के अतिरिक्त कोई संपत्ति नहीं थी। इस कठिन पृष्ठभूमि के बावजूद अकबर ने तेरह वर्ष की आयु में अपने पिता के शत्रु को परास्त कर दिया।

चरण 2: मुख्य कथन से संबंध जोड़ें गद्यांश इस उपलब्धि को विपत्तियों में हुए विकास से जोड़ता है। उदाहरण का उद्देश्य अकबर की पूरी जीवनी बताना नहीं, बल्कि यह समझाना है कि कठिन परिस्थितियों में पलने वाला व्यक्ति संघर्ष का सामना करना सीखता है। इसी से आरंभ का कथन पुष्ट होता है कि बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में विकसित होती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अकबर का उदाहरण यह सिद्ध करने के लिए दिया गया है कि अभाव और संकट मनुष्य में संघर्ष की शक्ति विकसित करते हैं। कठिन परिस्थितियों में पले अकबर की कम आयु में विजय इसी विचार की पुष्टि करती है।

त्वरित सुझाव: उदाहरण का उद्देश्य पूछे जाने पर पहले मूल कथन लिखें, फिर दिए गए प्रसंग से उसका समर्थन करें।

2(ख). पांडवों की विजय का क्या कारण था ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश में दिए गए कारण पर आधारित होना चाहिए।
- लेखक संकटों का सामना करने से मिली शक्ति को पांडवों की विजय से जोड़ता है।

चरण 1: प्रतिकूल परिस्थिति देखें गद्यांश के अनुसार अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। फिर भी विजय पांडवों की हुई। इसलिए केवल अधिक वीरों का साथ होना यहाँ विजय का निर्णायक कारण नहीं माना गया है।

चरण 2: विजय का कारण बताएँ पांडव लाक्षागृह की मुसीबत झेल चुके थे और वनवास के जोखिम पार कर चुके थे। इन कठिन अनुभवों ने उन्हें संकटों से लड़ने का साहस और सामर्थ्य दिया, जिसके बल पर वे विजयी हुए।

चरण 3: निष्कर्ष पांडवों की विजय का कारण लाक्षागृह की मुसीबत और वनवास के जोखिमों को पार करने से प्राप्त संघर्ष की शक्ति थी।

त्वरित सुझाव: कारण के उत्तर में गद्यांश के दोनों प्रसंग, लाक्षागृह और वनवास, स्पष्ट रूप से लिखें।

2(ग). आशय स्पष्ट कीजिए –

"जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है ।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीत की हँसी और हार का रोना क्रमशः बड़ी सफलता के आनंद और असफलता के दुख के संकेत हैं।
- यह कथन जोखिम से बचकर साधारण सुरक्षित जीवन बिताने वाले लोगों की स्थिति बताता है।

चरण 1: कथन का संदर्भ समझें लेखक जीवन की दो सूरतें बताता है। पहली में मनुष्य बड़े उद्देश्य के लिए लगातार प्रयास करता है और असफलताओं पर भी पीछे नहीं हटता। दूसरी में लोग जोखिम से बचते हैं और सुरक्षित, सीमित जीवन में संतुष्ट रहते हैं। उद्धृत वाक्य इसी दूसरी स्थिति के संदर्भ में आया है।

चरण 2: निहित अर्थ स्पष्ट करें जो लोग किसी बड़े लक्ष्य के लिए अपनी सुविधा को दाँव पर नहीं लगाते, उन्हें बड़ी सफलता का उल्लास नहीं मिलता। साथ ही वे बड़े संघर्ष में पराजय का गहरा दुख भी नहीं झेलते। उनका जीवन एकरस और उत्साहहीन रहता है। जीत का हँसना और हार का रोना इसी आनंद तथा दुख का मानवीकरण है; इसे सचमुच हँसने या रोने की घटना नहीं समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि जोखिम से बचने वालों का जीवन साधारण और एकरस रहता है। वे न बड़ी सफलता का आनंद अनुभव करते हैं और न बड़े संघर्ष की असफलता का दुख।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय प्रतीकों को सीधे अर्थ में बदलें और सुरक्षित जीवन की एकरसता से उनका संबंध बताएँ।

2(घ). साहस की ज़िंदगी को सबसे बड़ी जिंदगी क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में हिम्मत को जीवन का सबसे बड़ा गुण और अन्य गुणों के विकास का आधार बताया गया है।
- साहसी जीवन भय और जनमत के दबाव से मुक्त होकर बड़े उद्देश्य की ओर बढ़ता है।

चरण 1: साहसी जीवन की पहचान करें ऐसा जीवन निडर और बेखौफ़ होता है। साहसी व्यक्ति यह सोचकर अपने कदम नहीं रोकता

कि तमाशा देखने वाले उसके बारे में क्या कहेंगे। वह अपने बड़े उद्देश्य के लिए कोशिश करता है और असफलताओं के बीच भी पीछे नहीं हटता। इस प्रकार भय उसकी कार्यदिशा का निर्णय नहीं करता।

चरण 2: श्रेष्ठता का कारण समझाएँ हिम्मत मनुष्य को कठिनाइयों और जोखिमों का सामना करने की शक्ति देती है। लेखक के अनुसार उसके अन्य गुण भी इसी हिम्मत से पैदा होते हैं। ऐसा व्यक्ति पड़ोसियों की चाल देखकर अपनी गति कम नहीं करता और अपने लक्ष्य के प्रति स्वतंत्र रहता है। उसकी सक्रियता और निर्भीकता दूसरों के लिए भी प्रेरणा बनती है तथा मनुष्यता को आगे बढ़ने का प्रकाश मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष साहस की जिंदगी सबसे बड़ी है क्योंकि वह निडर होकर बड़े लक्ष्यों के लिए संघर्ष करती है। हिम्मत अन्य गुणों को जन्म देती है और मनुष्य को लोकमत के भय तथा कठिनाइयों से ऊपर उठाकर आगे बढ़ाती है।

त्वरित सुझाव: क्यों के उत्तर में केवल निडर शब्द न दोहराएँ; बड़े लक्ष्य, निरंतर संघर्ष और अन्य गुणों के विकास का कारण भी दें।

2(ङ). दुनिया की असली ताकत किसे कहा गया है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में जनमत की उपेक्षा करके उद्देश्य के अनुसार जीने वाले व्यक्ति को दुनिया की असली ताकत कहा गया है।
- यहाँ उपेक्षा का संबंध दर्शकों की राय के भय से मुक्त रहने से है।

चरण 1: किसे कहा गया है पहचानें साहसी मनुष्य अपने काम का निर्णय इस आधार पर नहीं करता कि देखने वाले उसके बारे में क्या सोचेंगे। वह जनमत के दबाव में अपनी दिशा नहीं बदलता। लेखक ने इसी स्वतंत्र और निडर व्यक्ति को दुनिया की असली ताकत कहा है। उत्तर में इस विशेषता का उल्लेख करना आवश्यक है।

चरण 2: कारण को पाठ से जोड़ें ऐसा व्यक्ति बड़े उद्देश्य के लिए अपनी शक्ति लगाता है और दूसरों की गति देखकर अपने कदम धीमे नहीं करता। उसकी निर्भीक सक्रियता परिवर्तन संभव बनाती है। लेखक कहता है कि मनुष्यता को प्रकाश भी उसी से मिलता है। अर्थात वह अपने आचरण से लोगों को आगे बढ़ने की दिशा और प्रेरणा देता है। इसलिए उसकी शक्ति केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित नहीं रहती।

चरण 3: निष्कर्ष जनमत के भय की उपेक्षा करके निडरता से अपने उद्देश्य पर चलने वाला मनुष्य दुनिया की असली ताकत है, क्योंकि उसी से मनुष्यता को दिशा, प्रकाश और परिवर्तन की प्रेरणा मिलती है।

त्वरित सुझाव: किसे और क्यों को अलग पहचानें: पहले जनमत से निर्भय व्यक्ति, फिर मनुष्यता को मिलने वाला प्रकाश लिखें।

2(च). क्रांतिकारियों के क्या लक्षण हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश के अंतिम वाक्य पर आधारित है, जहाँ क्रांतिकारी व्यक्ति के स्वतंत्र उद्देश्य और दृढ़ गति का वर्णन है।
- क्रांतिकारी अपने लक्ष्य तथा प्रयास का निर्णय पड़ोसियों की नकल करके नहीं करता।

चरण 1: पाठ का आधार पहचानना गद्यांश कहता है कि क्रांति करने वाले अपने उद्देश्य की तुलना पड़ोसी के उद्देश्य से नहीं करते। इससे उनके विचारों और लक्ष्य की स्वतंत्रता स्पष्ट होती है।

चरण 2: लक्षण स्पष्ट करना वे पड़ोसी की चाल देखकर अपनी चाल मद्धिम भी नहीं बनाते। वे जनमत की चिंता किए बिना अपने लक्ष्य की ओर निर्भय होकर बढ़ते हैं। इस प्रकार स्वतंत्र चिंतन और दृढ़ संकल्प उनके प्रमुख लक्षण हैं।

चरण 3: निष्कर्ष क्रांतिकारी निर्भय, स्वतंत्र विचारों वाले और अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़ होते हैं। वे दूसरों से अपने लक्ष्य की तुलना करके या उनकी धीमी चाल देखकर अपनी गति कम नहीं करते।

त्वरित सुझाव: अंतिम वाक्य के दोनों पक्ष लिखें: उद्देश्य की तुलना नहीं करना और अपनी गति धीमी नहीं करना।

2(छ). ज़िंदगी की कौन सी सूरत आपको अच्छी लगती है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिगत पसंद का कारण गद्यांश के विचारों से जोड़कर देना आवश्यक है।
- गद्यांश में पहली जीवन-पद्धति बड़े उद्देश्य, साहस और असफलताओं के बीच भी आगे बढ़ने की है।

चरण 1: दो जीवन-पद्धतियों का अंतर पहली सूरत में मनुष्य बड़े उद्देश्य के लिए प्रयास करता है और असफलताओं के बावजूद पीछे नहीं हटता। दूसरी सूरत में वह सुरक्षित, सीमित जीवन जीता है, जहाँ न बड़ी विजय का सुख है और न बड़ी हार का अनुभव। गद्यांश पहली सूरत को जीवन की सार्थकता से जोड़ता है।

चरण 2: पसंद का कारण बताना मुझे पहली, अर्थात साहस और संघर्ष वाली ज़िंदगी अच्छी लगती है। बड़े उद्देश्य के लिए प्रयत्न करने से मनुष्य में आत्मविश्वास, दृढ़ता और आगे बढ़ने की शक्ति पैदा होती है। असफलता उसे प्रयास छोड़ने के बजाय अनुभव देती है। ऐसा जीवन व्यक्ति के विकास के साथ समाज को भी नई दिशा दे सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष मुझे बड़े उद्देश्य के लिए साहसपूर्वक संघर्ष करने वाली ज़िंदगी अच्छी लगती है, क्योंकि उसमें असफलताओं के बावजूद आगे बढ़ने का उत्साह रहता है। इससे व्यक्तित्व का विकास होता है तथा सार्थक सफलता प्राप्त करने की संभावना बढ़ती है।

त्वरित सुझाव: अपनी पसंद साफ लिखें और उसके समर्थन में गद्यांश से साहस, संघर्ष तथा निरंतर प्रयास का आधार दें।

2(ज). गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- अकबर, पांडव और क्रांतिकारियों के उदाहरण साहस तथा संघर्ष के महत्त्व को स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: केंद्रीय विचार पहचानना लेखक संकटों से व्यक्तित्व के विकास की बात करता है। वह बड़े लक्ष्य के लिए जोखिम उठाने और असफलताओं में भी आगे बढ़ने को श्रेष्ठ जीवन मानता है।

चरण 2: शीर्षक का औचित्य साहस की महिमा शीर्षक दोनों अनुच्छेदों को समेटता है। पहले अनुच्छेद में हिम्मत और संघर्ष का महत्त्व है तथा दूसरे में निर्भय व्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक उपयोगिता बताई गई है। किसी एक उदाहरण का नाम पूरे गद्यांश का आशय नहीं समेटेगा।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है: साहस की महिमा।

त्वरित सुझाव: शीर्षक किसी एक घटना पर नहीं, दोनों अनुच्छेदों में बार-बार उभरते साहस के विचार पर रखें।

2(झ). निडर और बेखौफ़ में प्रयुक्त उपसर्ग लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग मूल शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन करता है।
- निषेध या अभाव का अर्थ देने वाले अंश को मूल शब्द से अलग पहचानना चाहिए।

चरण 1: निडर का विभाजन निडर में मूल शब्द डर है और उससे पहले नि जुड़ा है। डर का अभाव या भय से मुक्त होने का अर्थ देने के कारण नि यहाँ उपसर्ग है। पूरे शब्द को उपसर्ग नहीं कहा जा सकता।

चरण 2: बेखौफ़ का विभाजन बेखौफ़ में मूल शब्द खौफ़ है, जिसका अर्थ भय है। इसके पहले बे जुड़कर भय के अभाव का अर्थ देता है। अत: इसमें बे उपसर्ग है। दोनों शब्दों में डर और खौफ़ मूल शब्द हैं; उपसर्ग उनके पहले आए अंश हैं।

चरण 3: निष्कर्ष निडर में नि तथा बेखौफ़ में बे उपसर्ग प्रयुक्त हैं।

त्वरित सुझाव: पहले डर और खौफ़ जैसे मूल शब्द अलग करें; उनके पहले बचा नि या बे ही अपेक्षित उपसर्ग है।

2(ञ). मिश्र वाक्य में बदलिए – साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और कम-से-कम एक आश्रित उपवाक्य होता है।
- रूपांतरण में मूल वाक्य का अर्थ सुरक्षित रखते हुए जो और वह जैसी संबद्ध रचना का प्रयोग किया जा सकता है।

चरण 1: मूल अर्थ सुरक्षित रखना मूल वाक्य साहस से युक्त ज़िंदगी को सबसे बड़ी ज़िंदगी बताता है। रूपांतरण करते समय साहस का गुण और जीवन की श्रेष्ठता, दोनों बने रहने चाहिए। केवल दो स्वतंत्र वाक्य जोड़ देने से अपेक्षित मिश्र रचना नहीं बनेगी।

चरण 2: आश्रित उपवाक्य बनाना जो ज़िंदगी साहस से भरी होती है विशेषण आश्रित उपवाक्य है। वह सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है प्रधान उपवाक्य है। जो और वह के संबंध से दोनों जुड़ते हैं तथा मूल अर्थ भी सुरक्षित रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष मिश्र वाक्य: जो ज़िंदगी साहस से भरी होती है, वह सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है।

त्वरित सुझाव: जो से आरंभ होने वाले आश्रित उपवाक्य को वह वाले प्रधान उपवाक्य से जोड़ें और मूल अर्थ जाँचें।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :
यदि मैं भारत का शिक्षा मन्त्री होता [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कल्पनात्मक निबंध में दिए गए विषय पर प्रथम पुरुष में विचार और कार्ययोजना प्रस्तुत की जाती है।
- शिक्षा की समस्याओं के साथ व्यावहारिक सुधार, समान अवसर और मूल्यपरक दृष्टि देना आवश्यक है।

चरण 1: निबंध की रूपरेखा भूमिका में शिक्षा का महत्त्व लिखें। मुख्य भाग में सबके लिए विद्यालय, शिक्षकों का प्रशिक्षण, मातृभाषा, कौशल, परीक्षा-सुधार और समान अवसर की योजना रखें। अंत में शिक्षित, विवेकशील और जिम्मेदार नागरिक बनाने का संकल्प दें। विषय कल्पनात्मक है, इसलिए भाषा यदि मैं शिक्षा मन्त्री होता जैसी प्रथम पुरुष शैली में रहेगी।

चरण 2: विचारों का क्रम और प्रस्तुति निबंध को छोटे, परस्पर जुड़े अनुच्छेदों में व्यवस्थित करें। समस्याएँ गिनाने के साथ उनके समाधान

भी दें। बालिकाओं, वंचित बच्चों और दिव्यांग विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखें। तकनीक को साधन मानें और शिक्षक की भूमिका को महत्त्व दें। अनावश्यक आँकड़ों या अप्रमाणित दावों के बिना स्पष्ट, संतुलित भाषा का प्रयोग करें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध यदि मैं भारत का शिक्षा मन्त्री होता

शिक्षा मनुष्य को केवल रोज़गार के योग्य नहीं बनाती, बल्कि उसे विवेक, संवेदना और जिम्मेदारी भी देती है। किसी देश का भविष्य उसके विद्यालयों में आकार लेता है। यदि मैं भारत का शिक्षा मन्त्री होता, तो शिक्षा को हर बच्चे तक पहुँचाने और उसे जीवन से जोड़ने का प्रयास करता।

मेरी पहली प्राथमिकता होती कि कोई बच्चा गरीबी, दूरी या भेदभाव के कारण विद्यालय से बाहर न रहे। गाँवों और दूरस्थ क्षेत्रों में पर्याप्त विद्यालय, पुस्तकालय, स्वच्छ पेयजल तथा सुरक्षित शौचालय उपलब्ध कराता। बालिकाओं और दिव्यांग विद्यार्थियों की सुविधाओं पर विशेष ध्यान देता। आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को पुस्तकों, छात्रवृत्ति और परिवहन की सहायता देता।

अच्छी शिक्षा के लिए योग्य और प्रेरित शिक्षक आवश्यक हैं। इसलिए रिक्त पद भरता तथा शिक्षकों के नियमित प्रशिक्षण की व्यवस्था करता। प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा को महत्त्व देता, ताकि बच्चे समझकर सीखें। साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं और आवश्यक विदेशी भाषाओं के अध्ययन के अवसर भी उपलब्ध कराता।

पाठ्यक्रम में रटने के स्थान पर जिज्ञासा, प्रयोग और तर्क को बढ़ावा देता। विज्ञान, साहित्य और इतिहास के साथ खेल, कला, पर्यावरण तथा व्यावहारिक कौशल को उचित स्थान देता। डिजिटल साधनों की सुविधा बढ़ाता, पर जिन विद्यार्थियों के पास उपकरण या इंटरनेट नहीं हैं, उनके लिए वैकल्पिक संसाधन भी सुनिश्चित करता।

परीक्षाओं को केवल स्मरणशक्ति की कसौटी नहीं रहने देता। समझ, रचनात्मकता और समस्या हल करने की क्षमता का मूल्यांकन करता। विद्यार्थियों पर अनावश्यक दबाव कम करने के लिए परामर्श की व्यवस्था करता। विद्यालयों में सहयोग, समानता, श्रम के सम्मान और संविधान के मूल्यों की भावना विकसित करता।

मेरा लक्ष्य ऐसी शिक्षा-व्यवस्था बनाना होता जिसमें हर विद्यार्थी अपनी क्षमता पहचान सके। यदि शिक्षा ज्ञान के साथ चरित्र और संवेदना का विकास करे, तो देश आत्मनिर्भर, न्यायपूर्ण और प्रगतिशील बन सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष मेरी शिक्षा-नीति का उद्देश्य सबको समान अवसर देकर ज्ञानवान, कुशल, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनाना होता।

त्वरित सुझाव: कल्पनात्मक निबंध में केवल इच्छाएँ न गिनाएँ; प्रत्येक प्रमुख शिक्षा-समस्या के साथ लागू किया जा सकने वाला उपाय दें।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

मोबाइल बिना सब सूना [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मोबाइल की उपयोगिता और उसके संतुलित प्रयोग पर विचार प्रस्तुत करना इस निबंध का उद्देश्य है।
- निबंध में भूमिका, क्रमबद्ध विवेचन और विषय से जुड़ा उपसंहार होना चाहिए। भाषा स्पष्ट रहे तथा विचारों का प्रवाह बना रहे।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति विषय का उपयुक्त शीर्षक देकर आरंभ करें। भूमिका के बाद अलग अनुच्छेदों में मुख्य विचार विकसित करें। उदाहरण विषय से संबंधित हों और उपसंहार में केंद्रीय संदेश स्पष्ट हो।

चरण 2: विचारों का क्रम पहले संचार, शिक्षा और दैनिक सुविधाओं का उल्लेख करें; फिर अतिनिर्भरता के दुष्परिणाम बताकर विवेकपूर्ण प्रयोग का संदेश दें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध मोबाइल बिना सब सूना

आज मोबाइल हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। घर से निकलते समय यदि मोबाइल छूट जाए तो लगता है कि कोई आवश्यक वस्तु पीछे रह गई है। दूर बैठे संबंधियों से बातचीत करनी हो अथवा किसी आपात स्थिति में सहायता माँगनी हो, यह छोटा उपकरण तुरंत काम आता है। इसी अनुभव को विषय का कथन रोचक ढंग से व्यक्त करता है।

मोबाइल ने संचार की गति बढ़ाने के साथ अनेक सुविधाएँ भी दी हैं। विद्यार्थी शैक्षिक सामग्री पढ़ सकते हैं, शिक्षक से अपनी शंका पूछ सकते हैं और उपयोगी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। किसान मौसम की सूचना ले सकता है तथा यात्री मार्ग और रेल के समय का पता कर सकता है। कैमरा, घड़ी और संदेश जैसी सुविधाएँ एक ही उपकरण में उपलब्ध हैं। व्यापारियों और कामकाजी लोगों के लिए भी संपर्क बनाए रखना सरल हुआ है।

परंतु सुविधा का अर्थ यह नहीं कि हमारा पूरा जीवन इसी पर निर्भर हो जाए। भोजन करते समय, पढ़ाई के बीच अथवा परिवार के साथ बैठकर लगातार मोबाइल देखना संबंधों में दूरी बढ़ाता है। खेल, पुस्तकें और प्रत्यक्ष बातचीत पीछे छूटने लगते हैं। अनावश्यक संदेशों में समय नष्ट होता है तथा वाहन चलाते समय इसका प्रयोग दुर्घटना का कारण बन सकता है। बिना जाँच के मिली सूचना को आगे भेजना भी हानिकारक है।

इसलिए मोबाइल का उपयोग आवश्यकता के अनुसार और निश्चित समय तक करना चाहिए। पढ़ाई, विश्राम और पारिवारिक बातचीत के लिए अलग समय रखना उपयोगी है। मोबाइल हमारा सहायक है; उसे जीवन का संचालक नहीं बनाना चाहिए। जीवन की सच्ची समृद्धि उपकरणों के साथ मानवीय संबंधों और सार्थक गतिविधियों से आती है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार निबंध में विषय के विभिन्न पक्षों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करते हुए उपयोगी और संतुलित निष्कर्ष दिया गया है।

त्वरित सुझाव: पहले विषय के तीन मुख्य बिंदु लिख लें, फिर प्रत्येक को अलग अनुच्छेद में विकसित करके अंतिम अनुच्छेद में केंद्रीय संदेश दें।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कर्म के महत्त्व, परिश्रम और उत्तरदायित्व को तर्क तथा जीवन के उदाहरणों से स्पष्ट करना इस निबंध का आधार है।
- निबंध में भूमिका, क्रमबद्ध विवेचन और विषय से जुड़ा उपसंहार होना चाहिए। भाषा स्पष्ट रहे तथा विचारों का प्रवाह बना रहे।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति विषय का उपयुक्त शीर्षक देकर आरंभ करें। भूमिका के बाद अलग अनुच्छेदों में मुख्य विचार विकसित करें। उदाहरण विषय से संबंधित हों और उपसंहार में केंद्रीय संदेश स्पष्ट हो।

चरण 2: विचारों का क्रम उक्ति का आशय बताने के बाद विद्यार्थी, किसान और समाज के उदाहरण दें; अंत में सत्कर्म और निरंतर प्रयास का निष्कर्ष रखें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध कर्म प्रधान विश्व रचि राखा

मनुष्य के जीवन में कर्म का विशेष स्थान है। केवल इच्छा करने से लक्ष्य प्राप्त नहीं होता; उसके लिए प्रयास करना पड़ता है। विषय में दी गई उक्ति भी इसी सत्य की ओर संकेत करती है कि संसार की व्यवस्था में कर्म प्रधान है। हमारी क्षमताएँ तभी उपयोगी बनती हैं जब हम उन्हें काम में लगाते हैं।

प्रकृति हमें निरंतर सक्रियता की प्रेरणा देती है। नदी बहती है और पेड़ अपनी वृद्धि के साथ फल तथा छाया देते हैं। मनुष्य को भी आलस्य छोड़कर अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। खेत में बीज बोने, सिंचाई करने और फसल की देखभाल करने पर ही किसान को उपज मिलती है। विद्यार्थी नियमित अध्ययन और अभ्यास से ज्ञान अर्जित करता है। खिलाड़ी का प्रदर्शन भी निरंतर अभ्यास से निखरता है। सफलता के पीछे प्रायः ऐसा श्रम होता है जो दर्शक को दिखाई नहीं देता।

भाग्य के भरोसे बैठना व्यक्ति की कार्यशक्ति को कम कर देता है। कठिनाई आए तो अपने प्रयासों की समीक्षा करके सुधार करना अधिक उपयोगी है। असफलता को अंतिम निर्णय मानने के बजाय उससे सीखना चाहिए। फिर भी कर्म का महत्त्व बताने का अर्थ यह नहीं कि हर परिस्थिति हमारे नियंत्रण में है। परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो सकती हैं; ऐसे समय धैर्य, सहयोग और सतत प्रयत्न हमारा मार्ग बनाते हैं।

कर्म के साथ उसकी दिशा भी महत्त्वपूर्ण है। छल से पाया लाभ समाज का हित नहीं करता। ईमानदार परिश्रम, दूसरों के अधिकारों का सम्मान और अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह ही श्रेष्ठ कर्म हैं। शिक्षक, चिकित्सक, श्रमिक और किसान अपने कर्तव्य निभाकर सामाजिक जीवन को चलाते हैं।

अतः हमें ऊँचे सपने देखने के साथ उन्हें पूरा करने का व्यावहारिक प्रयास करना चाहिए। समय का सदुपयोग, अनुशासन और नैतिक आचरण व्यक्ति तथा समाज दोनों को आगे बढ़ाते हैं। यही कर्म की प्रधानता का वास्तविक संदेश है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार निबंध में विषय के विभिन्न पक्षों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करते हुए उपयोगी और संतुलित निष्कर्ष दिया गया है।

त्वरित सुझाव: पहले विषय के तीन मुख्य बिंदु लिख लें, फिर प्रत्येक को अलग अनुच्छेद में विकसित करके अंतिम अनुच्छेद में केंद्रीय संदेश दें।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

क्रिकेट का अन्य खेलों पर प्रभाव [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खेल-संस्कृति में क्रिकेट की लोकप्रियता के लाभ तथा अन्य खेलों के अवसरों पर उसके प्रभाव का संतुलित विवेचन करना है।
- निबंध में भूमिका, क्रमबद्ध विवेचन और विषय से जुड़ा उपसंहार होना चाहिए। भाषा स्पष्ट रहे तथा विचारों का प्रवाह बना रहे।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति विषय का उपयुक्त शीर्षक देकर आरंभ करें। भूमिका के बाद अलग अनुच्छेदों में मुख्य विचार विकसित करें। उदाहरण विषय से संबंधित हों और उपसंहार में केंद्रीय संदेश स्पष्ट हो।

चरण 2: विचारों का क्रम लोकप्रियता के कारण और प्रेरक प्रभाव बताकर संसाधनों तथा प्रचार में असंतुलन समझाएँ; समाधान में सभी खेलों के लिए अवसर सुझाएँ।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध क्रिकेट का अन्य खेलों पर प्रभाव

भारत में क्रिकेट अत्यंत लोकप्रिय खेल है। किसी बड़े मुकाबले के समय घरों, बाजारों और सार्वजनिक स्थानों पर लोगों का उत्साह दिखाई देता है। खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ युवाओं को आकर्षित करती हैं। इस लोकप्रियता का प्रभाव देश की समूची खेल-संस्कृति पर पड़ता है। इसके कुछ पक्ष प्रेरक हैं, जबकि कुछ प्रश्न अन्य खेलों के विकास से जुड़े हैं।

क्रिकेट ने अनेक बच्चों में खेल के प्रति रुचि जगाई है। सामूहिक प्रयास, नियमों का पालन, धैर्य और प्रतिस्पर्धा की भावना इससे विकसित हो सकती है। खिलाड़ियों की सफलता देखकर परिवार भी खेल को समय की बर्बादी मानने के बजाय एक गंभीर क्षेत्र के रूप में स्वीकार करने लगे हैं। यह बदलता दृष्टिकोण अन्य खेलों के खिलाड़ियों को भी लाभ पहुँचा सकता है।

दूसरी ओर, अत्यधिक एकतरफा ध्यान से असंतुलन पैदा होता है। समाचार माध्यमों में क्रिकेट को अधिक स्थान मिलने पर हॉकी, कबड्डी, फुटबॉल, एथलेटिक्स और दूसरे खेलों की उपलब्धियाँ अपेक्षाकृत कम दिखाई देती हैं। विज्ञापन और प्रायोजन का बड़ा आकर्षण भी लोकप्रिय खिलाड़ियों की ओर होता है। सीमित सुविधाओं वाले क्षेत्रों में अन्य खेलों के प्रतिभाशाली बच्चों को अच्छे मैदान, प्रशिक्षक और उपकरण जुटाने में कठिनाई हो सकती है। जब सफलता का एक ही रूप सामने रखा जाता है, तो बच्चे अपनी स्वाभाविक रुचि पहचानने से भी चूक सकते हैं।

इस स्थिति का समाधान क्रिकेट के विरोध में नहीं, बल्कि खेलों के व्यापक विकास में है। विद्यालयों में अनेक खेलों का परिचय और प्रशिक्षण मिलना चाहिए। स्थानीय प्रतियोगिताएँ आयोजित हों तथा खिलाड़ियों का चयन उनकी योग्यता के अनुसार हो। समाचार माध्यम अन्य खेलों की उपलब्धियों को भी उचित स्थान दें। सरकार, खेल संस्थाएँ और प्रायोजक सुविधाओं का विस्तार करने में सहयोग करें।

हर खेल शरीर, मन और व्यक्तित्व को विकसित करने का अपना अवसर देता है। क्रिकेट का उत्साह बना रहे, लेकिन उसके साथ अन्य खेलों को भी सम्मान और संसाधन मिलें। तभी देश में समावेशी और सशक्त खेल-संस्कृति विकसित होगी।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार निबंध में विषय के विभिन्न पक्षों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करते हुए उपयोगी और संतुलित निष्कर्ष दिया गया है।

त्वरित सुझाव: पहले विषय के तीन मुख्य बिंदु लिख लें, फिर प्रत्येक को अलग अनुच्छेद में विकसित करके अंतिम अनुच्छेद में केंद्रीय संदेश दें।

4. कल कारखानों के द्वारा औद्योगिक अपद्रव्य को नदियों में छोड़े जाने के कारण बढ़ रहे प्रदूषण का वर्णन करते हुए उस पर कड़ी पाबन्दी लगाने हेतु अपने राज्य के पर्यावरण मंत्री को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन और समापन स्पष्ट होते हैं।
- समस्या का वर्णन तथ्यपूर्ण तथा निवेदन विनम्र और कार्यवाही के सुझाव व्यावहारिक होने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना यह पत्र राज्य के पर्यावरण मंत्री को लिखा जाना है। इसलिए भाषा संयत और प्रशासनिक कार्यवाही की माँग स्पष्ट होनी चाहिए। पहले औद्योगिक अपद्रव्य से नदी के जल पर पड़ने वाला प्रभाव बताएँगे। इसके बाद जनस्वास्थ्य, जलीय जीवों और कृषि पर संकट का उल्लेख करेंगे। अंत में अपशिष्ट-शोधन, नियमित जाँच और उल्लंघन पर कठोर कार्यवाही का निवेदन करेंगे।

चरण 2: पूरा आदर्श पत्र 25, विकास नगर
लखनऊ
15 मार्च, 2014
सेवा में,
माननीय पर्यावरण मंत्री
उत्तर प्रदेश शासन
लखनऊ
विषय: नदियों में औद्योगिक अपद्रव्य छोड़ने पर कड़ी पाबंदी लगाने हेतु।
महोदय,
मैं आपका ध्यान प्रदेश की नदियों में बढ़ते औद्योगिक प्रदूषण की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। अनेक कल-कारखाने बिना शोधन किए रसायनयुक्त अपशिष्ट सीधे नदियों में छोड़ रहे हैं। इससे नदी का जल दूषित तथा दुर्गंधयुक्त हो रहा है। जल में रहने वाले जीव संकट में हैं और नदी पर निर्भर लोगों के स्वास्थ्य को भी खतरा बढ़ रहा है। इसी जल से सिंचाई करने पर मिट्टी और फसलों की गुणवत्ता प्रभावित होने की आशंका है।

इस समस्या से निपटने के लिए कृपया औद्योगिक इकाइयों में अपशिष्ट-शोधन संयंत्र लगाना और उन्हें नियमित चलाना अनिवार्य कराया जाए। नदी में छोड़े जाने वाले जल की स्वतंत्र जाँच हो तथा जाँच के निष्कर्ष सार्वजनिक किए जाएँ। प्रदूषण फैलाने वाली इकाइयों पर कड़ा जुर्माना लगाया जाए और बार-बार नियम तोड़ने पर उनका संचालन रोका जाए। शिकायतों के त्वरित निस्तारण की व्यवस्था भी की जाए।

आशा है कि आप स्वच्छ जल और जनस्वास्थ्य की रक्षा के लिए शीघ्र प्रभावी कदम उठाएँगे।
सधन्यवाद।
भवदीय
अजय कुमार

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में औद्योगिक अपद्रव्य के दुष्प्रभाव बताते हुए शोधन, निगरानी और कठोर प्रतिबंध की स्पष्ट माँग की गई है।

त्वरित सुझाव: विषय पंक्ति में समस्या और अपेक्षित कार्यवाही दोनों लिखें; पत्र के अंत में व्यावहारिक उपाय सुझाएँ।

अथवा

4. 'खनन माफ़िया' द्वारा आपकी बस्ती के निकट किए जा रहे अवैध खनन से निपटने के लिए अपर्याप्त तैयारियों का उल्लेख करते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को पत्र का उद्देश्य जनहित की समस्या को सार्वजनिक मंच पर उठाकर संबंधित अधिकारियों का ध्यान खींचना है।
- समस्या के साथ प्रशासन की अपर्याप्त तैयारी और सुधार के ठोस सुझाव देना आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना पत्र में पहले बस्ती के निकट अवैध खनन की स्थिति और उससे होने वाले नुकसान का उल्लेख होगा। फिर निगरानी, गश्त और शिकायतों पर कार्यवाही की अपर्याप्त व्यवस्था बताई जाएगी। अंत में संपादक से पत्र प्रकाशित करने तथा प्रशासन से प्रभावी सुरक्षा और रोकथाम की माँग की जाएगी। किसी वास्तविक व्यक्ति पर अप्रमाणित व्यक्तिगत आरोप लगाए बिना समस्या को स्पष्ट रखा जाएगा।

चरण 2: पूरा आदर्श पत्र 18, शांति बस्ती
जयपुर
15 मार्च, 2014
सेवा में,
संपादक महोदय
दैनिक जनवाणी
जयपुर
विषय: बस्ती के निकट अवैध खनन रोकने की अपर्याप्त व्यवस्था के संबंध में।
महोदय,
आपके प्रतिष्ठित दैनिक के माध्यम से मैं अधिकारियों का ध्यान हमारी बस्ती के निकट हो रहे अवैध खनन की ओर दिलाना चाहता हूँ। खनन माफ़िया द्वारा लगातार मिट्टी और पत्थर निकाले जा रहे हैं। भारी वाहनों की आवाजाही से धूल, शोर और दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ गया है। जगह-जगह बने गहरे गड्ढे बच्चों और पशुओं के लिए संकट हैं। आसपास का प्राकृतिक स्वरूप भी बिगड़ रहा है।
इस गतिविधि को रोकने की तैयारियाँ अपर्याप्त हैं। नियमित गश्त और स्थायी निगरानी का अभाव है। शिकायत पहुँचाने तथा उस पर हुई कार्यवाही जानने की सरल व्यवस्था भी नहीं है। कभी-कभार की जाँच से अवैध खनन पर स्थायी रोक नहीं लग सकती।
प्रशासन से निवेदन है कि खनन, पुलिस और स्थानीय प्रशासन का संयुक्त दल गठित किया जाए। प्रभावित क्षेत्र में नियमित निरीक्षण हो, अवैध खनन और परिवहन में प्रयुक्त साधनों पर नियमानुसार कार्यवाही की जाए तथा खतरनाक गड्ढों के आसपास सुरक्षा-व्यवस्था की जाए। शिकायतकर्ताओं की सुरक्षा और शिकायतों का समयबद्ध निस्तारण भी सुनिश्चित हो।
कृपया इस पत्र को प्रकाशित कर जनहित की इस गंभीर समस्या को प्रमुखता दें।
सधन्यवाद।
भवदीय
रवि शर्मा

चरण 3: निष्कर्ष पत्र अवैध खनन से होने वाली हानि और रोकथाम की अपर्याप्त तैयारी को उजागर करते हुए प्रभावी प्रशासनिक कार्यवाही की माँग करता है।

त्वरित सुझाव: संपादक से प्रकाशन का निवेदन करें और प्रशासन की कमी के साथ उसके सुधार का ठोस उपाय भी दें।

5(क)(i). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

इंटरनेट की दो प्रमुख उपयोगिताएँ बताइए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट सूचना प्राप्त करने और संचार करने का व्यापक माध्यम है।
- प्रश्न में दो उपयोगिताएँ माँगी गई हैं, इसलिए दो अलग कार्य स्पष्ट लिखने चाहिए।

चरण 1: सूचना प्राप्त करना इंटरनेट से समाचार, शैक्षिक सामग्री तथा विविध विषयों की सूचनाएँ शीघ्र प्राप्त की जा सकती हैं। विद्यार्थी अध्ययन के लिए सामग्री खोज सकता है और पाठक देश-दुनिया की घटनाओं से अवगत रह सकता है।

चरण 2: संचार करना ई-मेल, संदेश और वीडियो वार्ता के माध्यम से दूर बैठे लोगों से तुरंत संपर्क किया जा सकता है। इससे संदेश और दस्तावेज भेजना आसान होता है। सूचना की खोज और पारस्परिक संचार अलग उपयोगिताएँ हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इंटरनेट की दो प्रमुख उपयोगिताएँ हैं: विविध विषयों की सूचनाएँ प्राप्त करना और ई-मेल आदि द्वारा त्वरित संचार करना।

त्वरित सुझाव: दो उपयोगिताओं में एक सूचना प्राप्त करने की और दूसरी लोगों से संपर्क करने की लिखें।

5(क)(ii). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

पीत पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में सत्यता, निष्पक्षता और जनहित आवश्यक हैं।
- पीत पत्रकारिता में सनसनी और आकर्षण को सत्यपरक प्रस्तुति से अधिक महत्त्व दिया जाता है।

चरण 1: विशेषता पहचानना जब समाचार को बेचने अथवा पाठकों का ध्यान खींचने के लिए सनसनीखेज बनाया जाता है और तथ्यों को बढ़ा-चढ़ाकर या तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया जाता है, तो पत्रकारिता की विश्वसनीयता प्रभावित होती है।

चरण 2: अर्थ स्पष्ट करना ऐसी प्रवृत्ति को पीत पत्रकारिता कहते हैं। इसमें अफवाह, अपुष्ट खबर तथा उत्तेजक प्रस्तुति का सहारा लिया जा सकता है। केवल किसी अपराध की सत्य और संतुलित रिपोर्टिंग करना पीत पत्रकारिता नहीं है; दोष सनसनी के लिए तथ्य और मर्यादा की उपेक्षा में है।

चरण 3: निष्कर्ष सनसनी फैलाने और पाठक या दर्शक बढ़ाने के लिए तथ्यों को तोड़-मरोड़कर, बढ़ा-चढ़ाकर अथवा अपुष्ट रूप में प्रस्तुत करने वाली पत्रकारिता पीत पत्रकारिता कहलाती है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में सनसनी तथा तथ्यों की उपेक्षा दोनों का उल्लेख करें; केवल नकारात्मक खबर कहना पर्याप्त नहीं है।

5(क)(iii). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

साइबर पत्रकारिता क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता का माध्यम मुद्रण, प्रसारण या इंटरनेट हो सकता है।
- साइबर पत्रकारिता की पहचान इंटरनेट पर समाचार का प्रकाशन और प्रसार है।

चरण 1: माध्यम की पहचान इंटरनेट पर समाचार वेबसाइटों, समाचार पोर्टलों और समाचार-पत्रों के ऑनलाइन संस्करणों के माध्यम से समाचार तथा विचार उपलब्ध कराए जाते हैं। पाठक इन्हें कंप्यूटर या मोबाइल से पढ़ सकता है।

चरण 2: परिभाषा और विशेषता इंटरनेट के माध्यम से की जाने वाली पत्रकारिता साइबर पत्रकारिता कहलाती है। इसमें समाचारों को शीघ्र अद्यतन किया जा सकता है और पाठ, चित्र, ध्वनि तथा वीडियो का उपयोग संभव है। इंटरनेट की हर गतिविधि पत्रकारिता नहीं है; उसका संबंध समाचार और सार्वजनिक सूचना से होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष इंटरनेट पर समाचारों, सूचनाओं और विचारों के संकलन, संपादन, प्रकाशन तथा प्रसार को साइबर पत्रकारिता कहते हैं। इसे ऑनलाइन या वेब पत्रकारिता भी कहा जाता है।

त्वरित सुझाव: साइबर पत्रकारिता की परिभाषा में इंटरनेट को माध्यम और समाचार-प्रसार को कार्य अवश्य बताएँ।

5(क)(iv). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

ब्रेकिंग न्यूज से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ब्रेकिंग न्यूज का संबंध किसी महत्त्वपूर्ण घटना की तत्काल सूचना से है।
- इसका उद्देश्य दर्शक या श्रोता को ताजा घटनाक्रम से तुरंत अवगत कराना है।

चरण 1: अर्थ समझिए किसी महत्त्वपूर्ण घटना के घटते ही उसके बारे में पहली बार प्रसारित की जाने वाली ताजा और तत्काल खबर को ब्रेकिंग न्यूज कहते हैं। इसमें घटना की शुरुआती, उपलब्ध सूचना दी जाती है।

चरण 2: प्रमुख विशेषता पहचानिए ऐसी खबर को उसकी तात्कालिकता और महत्त्व के कारण नियमित कार्यक्रम रोककर भी प्रसारित किया जा सकता है। बाद में पुष्टि किए गए नए विवरण मिलने पर सूचना को आगे बढ़ाया जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष ब्रेकिंग न्यूज किसी महत्त्वपूर्ण घटना की तत्काल प्रसारित होने वाली ताजा खबर है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में ताजगी, महत्त्व और तत्काल प्रसारण को जोड़ें; केवल सनसनी को इसकी पहचान न बनाएँ।

5(क)(v). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

मुद्रित माध्यमों की एक विशेषता बताइए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचारपत्र और पत्रिकाएँ मुद्रित माध्यमों के प्रमुख उदाहरण हैं।
- इनमें प्रकाशित सामग्री पाठक के पास बनी रहती है और दोबारा पढ़ी जा सकती है।

चरण 1: एक विशेषता चुनिए मुद्रित माध्यमों की एक प्रमुख विशेषता उनका स्थायित्व है। समाचारपत्र या पत्रिका में छपी सामग्री को पाठक सुरक्षित रख सकता है और आवश्यकता पड़ने पर फिर पढ़ सकता है।

चरण 2: पाठक के लिए उपयोग समझिए पाठक सामग्री को अपनी सुविधा और गति से पढ़ता है। किसी कठिन अंश को समझने के लिए वह उसी अंश पर लौट सकता है। इस प्रकार छपा हुआ पाठ बार-बार पढ़ने और संदर्भ के लिए उपयोगी होता है।

चरण 3: निष्कर्ष मुद्रित माध्यमों की एक विशेषता यह है कि उनकी सामग्री को सुरक्षित रखकर बार-बार पढ़ा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: एक ही विशेषता स्पष्ट लिखें और उसका छोटा-सा अर्थ बताएँ; स्थायित्व का संबंध सामग्री दोबारा पढ़ने से जोड़ें।

5(ख). 'महानगरों में यातायात की समस्या' विषय पर आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में किसी सामाजिक समस्या के कारण, प्रभाव और समाधान तार्किक क्रम में प्रस्तुत किए जाते हैं।
- शीर्षक और लेखक के नाम के बाद विषय का परिचय, विवेचन और उपसंहार दिया जाता है।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना शीर्षक में यातायात की समस्या स्पष्ट करें। भूमिका में महानगरों की स्थिति बताएँ, फिर वाहनों की वृद्धि और अव्यवस्थित व्यवस्था के कारण समझाएँ। समय, स्वास्थ्य और पर्यावरण पर प्रभाव बताकर सार्वजनिक परिवहन तथा नागरिक अनुशासन जैसे समाधान दें।

चरण 2: पूर्ण आलेख **महानगरों में यातायात की समस्या**

लेखक : अजय कुमार

महानगर अवसरों और सुविधाओं के केंद्र हैं, पर उनकी सड़कों पर बढ़ती भीड़ दैनिक जीवन को कठिन बना रही है। सुबह कार्यालय जाने और शाम घर लौटने का समय लंबी वाहन-पंक्तियों में बीतता है। यातायात की समस्या अब केवल असुविधा नहीं, बल्कि शहरों के विकास के सामने गंभीर चुनौती है।

इस समस्या का प्रमुख कारण निजी वाहनों की लगातार बढ़ती संख्या है। सार्वजनिक परिवहन की कमी और विभिन्न साधनों के बीच उचित संपर्क न होने से लोग अपना वाहन चुनते हैं। अवैध पार्किंग, सड़कों का अतिक्रमण, अनियोजित निर्माण और यातायात नियमों की उपेक्षा भी जाम बढ़ाते हैं।

जाम में फँसने से समय और ईंधन दोनों नष्ट होते हैं। वाहनों का धुआँ वायु को प्रदूषित करता है और लगातार बजते हॉर्न ध्वनि-प्रदूषण बढ़ाते हैं। यात्रियों में तनाव बढ़ता है तथा एंबुलेंस जैसी आवश्यक सेवाओं के रुकने से जीवन भी संकट में पड़ सकता है। पैदल चलने वालों और साइकिल चालकों के लिए असुरक्षित सड़कें समस्या को और गंभीर बनाती हैं।

समाधान के लिए सस्ती, नियमित और विश्वसनीय बस तथा मेट्रो सेवाओं का विस्तार आवश्यक है। इनके बीच आसान संपर्क उपलब्ध कराया जाए। सुरक्षित फुटपाथ और साइकिल-पथ बनाए जाएँ तथा पार्किंग का नियमन हो। लोग साझा वाहन अपनाएँ, अनावश्यक निजी यात्रा घटाएँ और यातायात संकेतों का पालन करें। प्रशासन तथा नागरिकों के संयुक्त प्रयासों से ही महानगरों का यातायात सुगम और सुरक्षित बन सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष सुदृढ़ सार्वजनिक परिवहन, सुविचारित नगर-योजना और जिम्मेदार नागरिक व्यवहार यातायात की समस्या के स्थायी समाधान के आधार हैं।

त्वरित सुझाव: आलेख में कारण से प्रभाव और प्रभाव से समाधान तक क्रम बनाएँ; केवल जाम का वर्णन करके उत्तर समाप्त न करें।

अथवा

5(ख). 'जनसंख्या में महिलाओं का गिरता अनुपात' विषय पर आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लैंगिक अनुपात का असंतुलन समानता और सामाजिक न्याय से जुड़ा विषय है।
- आलेख में समस्या के सामाजिक कारण, परिणाम और व्यावहारिक उपाय संतुलित भाषा में रखे जाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना शीर्षक और लेखक का नाम दें। भूमिका में महिलाओं के घटते अनुपात की चिंता रखें। पुत्र-प्राथमिकता, भेदभाव और स्वास्थ्य की उपेक्षा समझाएँ। फिर सामाजिक प्रभावों और शिक्षा, समान अवसर तथा कानून के पालन जैसे उपायों पर विचार करें।

चरण 2: पूर्ण आलेख **जनसंख्या में महिलाओं का गिरता अनुपात**

लेखिका : सुमन शर्मा

स्त्री और पुरुष समाज के समान अधिकार वाले सदस्य हैं। फिर भी जनसंख्या में महिलाओं का गिरता अनुपात हमारी सामाजिक सोच पर गंभीर प्रश्न उठाता है। विकास का दावा तब अधूरा रह जाता है, जब बेटी के जन्म को प्रसन्नता के स्थान पर चिंता का कारण माना जाता है।

इस असंतुलन के पीछे पुत्र को अधिक महत्त्व देने वाली मानसिकता प्रमुख है। दहेज जैसी कुप्रथाएँ बेटी को आर्थिक बोझ मानने की प्रवृत्ति बढ़ाती हैं। जन्म से पहले लिंग के आधार पर भेदभाव तथा जन्म के बाद बालिकाओं के पोषण, स्वास्थ्य और शिक्षा की उपेक्षा स्थिति को गंभीर बनाती है। महिलाओं की असुरक्षा और निर्णय लेने में उनकी सीमित भागीदारी भी इसी असमानता के रूप हैं।

महिलाओं की घटती संख्या का प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। यह समानता के मूल्यों को कमजोर करती है और स्त्रियों के शोषण तथा असुरक्षा को बढ़ा सकती है। किसी भी समाज का स्वस्थ विकास तभी संभव है, जब उसके सभी सदस्यों को सम्मान और आगे बढ़ने का अवसर मिले।

इस समस्या के समाधान के लिए कानूनों का प्रभावी पालन और सामाजिक चेतना दोनों आवश्यक हैं। लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव को रोका जाए। बेटियों को पौष्टिक भोजन, स्वास्थ्य-सेवा, शिक्षा और संपत्ति में समान अधिकार मिलें। परिवार दहेज का विरोध करें और बेटियों को आत्मनिर्भर बनने का अवसर दें। विद्यालय तथा जनसंचार माध्यम समानता का संदेश फैलाएँ। बेटी को सम्मान देना केवल नारा न होकर दैनिक व्यवहार बने, तभी जनसंख्या का संतुलन और समाज का भविष्य सुरक्षित होगा।

चरण 3: निष्कर्ष महिलाओं के अनुपात में गिरावट रोकने के लिए पुत्र-प्राथमिकता समाप्त कर बेटियों को जीवन, शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मान के समान अवसर देने होंगे।

त्वरित सुझाव: समस्या समझाते समय अप्रमाणित आँकड़े न दें; हर कारण के साथ समानता बढ़ाने वाला ठोस उपाय सोचें।

6. 'महँगी होती चिकित्सा सुविधाएँ' विषय पर फीचर लिखिए ।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वास्थ्य सेवाओं का महँगा होना केवल आर्थिक समस्या नहीं, सामान्य परिवारों के जीवन और सुरक्षा से जुड़ा सामाजिक प्रश्न है।
- फीचर में तथ्यपरक विवेचन के साथ मानवीय संवेदना और रोचक प्रस्तुति का संतुलन होना चाहिए।

चरण 1: फीचर का रूप और योजना प्रभावी शीर्षक, लेखक का नाम और किसी जीवंत परिस्थिति से आरंभ फीचर को आकर्षक बनाते हैं। विषय का विस्तार उपचार के खर्च, परिवार पर प्रभाव और व्यावहारिक उपायों के क्रम में करना चाहिए। भाषा संवेदनशील और सहज हो; बिना प्रमाण के आँकड़े या किसी वास्तविक व्यक्ति की मनगढ़ंत घटना न लिखें।

चरण 2: मुख्य बिंदुओं का संयोजन आरंभ में पाठक का ध्यान खींचने वाला दृश्य रखें। मध्य भाग में समस्या के कारण और प्रभाव स्पष्ट करें तथा अंतिम अनुच्छेद में समाधान और विचारोत्तेजक संदेश दें। प्रश्न में शब्द-सीमा नहीं दी गई है, इसलिए विषय का पर्याप्त विस्तार करते हुए अनावश्यक दोहराव से बचें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श फीचर **महँगी होती चिकित्सा सुविधाएँ**

विशेष संवाददाता

अस्पताल के बाहर दवा की पर्ची हाथ में लिए खड़ा व्यक्ति केवल बीमारी से नहीं जूझता; वह यह भी सोचता है कि इलाज का खर्च कहाँ से आएगा। जाँच, दवाएँ, अस्पताल का कमरा और बार-बार आने-जाने का किराया मिलकर साधारण परिवार का बजट बिगाड़ देते हैं।

चिकित्सा की नई तकनीकें जीवन बचाने की आशा जगाती हैं, लेकिन उनका लाभ तभी सार्थक है जब जरूरतमंद तक पहुँच सके। निजी अस्पतालों के भारी बिल और सरकारी अस्पतालों की भीड़ के बीच रोगी तथा उसके परिजन असमंजस में पड़ जाते हैं। कई परिवार बचत खर्च कर देते हैं, उधार लेते हैं या इलाज टालते रहते हैं। इलाज में देरी बीमारी और खर्च, दोनों बढ़ा सकती है।

समस्या का समाधान सुलभ सार्वजनिक चिकित्सा व्यवस्था को मजबूत करने में है। सरकारी अस्पतालों में पर्याप्त चिकित्सक, जरूरी जाँच और दवाएँ उपलब्ध हों। उपचार के खर्च की स्पष्ट जानकारी मिले और अनावश्यक जाँच से बचा जाए। सस्ती गुणवत्तापूर्ण दवाओं तथा

स्वास्थ्य सुरक्षा योजनाओं की जानकारी भी लोगों तक पहुँचे।

स्वास्थ्य को केवल खरीदने की वस्तु मानना उचित नहीं। स्वस्थ नागरिक ही समाज की शक्ति हैं। ऐसी व्यवस्था चाहिए जिसमें अस्पताल का दरवाजा खटखटाते समय रोगी को अपनी आर्थिक हैसियत से पहले अच्छे उपचार का भरोसा हो।

चरण 4: निष्कर्ष यह फीचर रोचक आरंभ, विषय के सामाजिक प्रभावों के विवेचन और सार्थक समाधान के साथ निर्धारित विषय को पूर्णता देता है।

त्वरित सुझाव: फीचर को केवल नारा या सूची न बनाएँ; जीवंत आरंभ के बाद कारण, मानवीय प्रभाव और समाधान को जुड़े हुए अनुच्छेदों में प्रस्तुत करें।

अथवा

6. 'दीवाली की रात, अपव्यय की मिसाल' विषय पर फीचर लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- त्योहार के उल्लास और अपव्यय के बीच अंतर समझाते हुए फीचर सामाजिक व्यवहार पर विचार करता है।
- फीचर में तथ्यपरक विवेचन के साथ मानवीय संवेदना और रोचक प्रस्तुति का संतुलन होना चाहिए।

चरण 1: फीचर का रूप और योजना शीर्षक और लेखक के नाम के बाद दीवाली की रात का जीवंत दृश्य प्रस्तुत करें। फिर आतिशबाजी, दिखावे और अनावश्यक खरीदारी से होने वाली बर्बादी का वर्णन करें। अंत में ऐसे विकल्प सुझाएँ जिनसे त्योहार का आनंद बना रहे और संसाधनों का उपयोग सार्थक हो।

चरण 2: मुख्य बिंदुओं का संयोजन आरंभ में पाठक का ध्यान खींचने वाला दृश्य रखें। मध्य भाग में समस्या के कारण और प्रभाव स्पष्ट करें तथा अंतिम अनुच्छेद में समाधान और विचारोत्तेजक संदेश दें। प्रश्न में शब्द-सीमा नहीं दी गई है, इसलिए विषय का पर्याप्त विस्तार करते हुए अनावश्यक दोहराव से बचें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श फीचर **दीवाली की रात, अपव्यय की मिसाल**

विशेष संवाददाता

दीयों की कतारों से जगमगाता घर, मिठाइयों की सुगंध और अपनों की मुसकान—दीवाली की यही सुंदर पहचान है। लेकिन इसी रात पटाखों की गूँज और धुएँ के बीच धन तथा संसाधनों की बर्बादी का दृश्य भी दिखाई देता है। कुछ क्षणों की चमक के लिए जलते पटाखे पीछे धुआँ, कचरा और शोर छोड़ जाते हैं।

त्योहार के नाम पर दिखावे की होड़ अपव्यय को बढ़ाती है। जरूरत से अधिक सजावट, अनावश्यक बिजली की खपत और अतिरिक्त मिठाइयों तथा उपहारों की खरीद परिवारों पर आर्थिक दबाव डालती है। बचे हुए भोजन का कूड़े में जाना और महँगी सजावटी वस्तुओं का तुरंत बेकार हो जाना उत्सव की संवेदना पर प्रश्न उठाता है। आतिशबाजी का धुआँ साँस के रोगियों को कष्ट देता है और तेज आवाज बुजुर्गों, छोटे बच्चों तथा पशुओं को परेशान करती है।

क्या आनंद के लिए इतनी बर्बादी जरूरी है? सीमित और सुरक्षित रोशनी, जरूरत के अनुसार खरीदारी और घर में मिल-बाँटकर मनाया गया उत्सव अधिक आत्मीय हो सकता है। स्थानीय कारीगरों के दीये खरीदकर उनका सहयोग किया जा सकता है। पटाखों पर खर्च होने वाले धन का कुछ हिस्सा जरूरतमंद परिवार की सहायता में लगाना भी रोशनी फैलाना है।

दीवाली अंधकार दूर करने का पर्व है। इसका उजाला तभी अर्थपूर्ण होगा जब हमारी खुशी दूसरों के जीवन में कठिनाई न बढ़ाए। संयम और संवेदना से मनाई गई दीवाली ही सच्चे उत्सव की मिसाल बनेगी।

चरण 4: निष्कर्ष यह फीचर रोचक आरंभ, विषय के सामाजिक प्रभावों के विवेचन और सार्थक समाधान के साथ निर्धारित विषय को पूर्णता देता है।

त्वरित सुझाव: फीचर को केवल नारा या सूची न बनाएँ; जीवंत आरंभ के बाद कारण, मानवीय प्रभाव और समाधान को जुड़े हुए अनुच्छेदों में प्रस्तुत करें।

7. प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

मैं जगजीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ !
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ ! [8 अंक]

7(क). जगजीवन का भार लिए फिरने से कवि का क्या आशय है ? ऐसे में भी वह क्या कर लेता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सांसारिक जीवन का भार जिम्मेदारियों, संघर्षों और कठिनाइयों का संकेत है।
- उत्तर में दिए गए पद्यांश के शब्दों और उनके प्रसंग को आधार बनाकर भाव स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: जीवन के भार का अर्थ कवि के कथन का आशय है कि वह संसार में रहते हुए जीवन के दायित्वों, दुखों और संघर्षों को साथ लेकर चलता है। वह जीवन की कठिन परिस्थितियों से अनजान नहीं है। यहाँ भार का अर्थ कोई वस्तु उठाना नहीं, बल्कि जीवन की जिम्मेदारियों और समस्याओं को सहना है।

चरण 2: भार के बीच प्रेम की रक्षा इतनी कठिनाइयों के बावजूद कवि अपने हृदय में प्रेम सँजोए रखता है। पंक्ति फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ स्पष्ट करती है कि संघर्ष उसे कठोर या प्रेमहीन नहीं बना देते। वह जीवन की प्रतिकूलताओं के बीच भी स्नेहपूर्ण जीवन जी लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष जगजीवन का भार संसार के दायित्वों, दुखों और संघर्षों का भार है। इन्हें सहते हुए भी कवि अपने मन में प्रेम बनाए रखता है और जीवन को प्रेमपूर्ण बना लेता है।

त्वरित सुझाव: पद्यांश के प्रमुख शब्द का लाक्षणिक अर्थ पहले बताएँ और फिर संबंधित अगली पंक्ति से कवि की मनोदशा स्पष्ट करें।

7(ख). 'स्नेह-सुरा' से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में प्रेम को मदिरा के रूप में प्रस्तुत करके उसके आनंद और तन्मयता को व्यक्त किया गया है।
- उत्तर में दिए गए पद्यांश के शब्दों और उनके प्रसंग को आधार बनाकर भाव स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: शब्दों का अभिप्राय स्नेह का अर्थ प्रेम और सुरा का अर्थ मदिरा है। कवि ने प्रेम को ऐसी मदिरा कहा है जिसके पान से मन आनंद और मस्ती से भर जाता है। यह वास्तविक मदिरापान का उल्लेख नहीं, प्रेम की गहरी अनुभूति को व्यक्त करने वाला काव्यात्मक प्रयोग है।

चरण 2: कवि की मनोदशा कवि प्रेम के आनंद में इतना तल्लीन है कि संसार की अपेक्षाओं की चिंता नहीं करता। मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ और अपने मन का गान करने की बात इसी स्वतंत्र तथा प्रेममय मनोदशा को स्पष्ट करती है। प्रेम उसे भीतर से प्रसन्न और आत्ममग्न रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष स्नेह-सुरा से कवि का आशय प्रेम की मदिरा अर्थात प्रेम के मादक आनंद से है। वह इसी आनंद में डूबा रहकर अपने मन की अनुभूतियों को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: पद्यांश के प्रमुख शब्द का लाक्षणिक अर्थ पहले बताएँ और फिर संबंधित अगली पंक्ति से कवि की मनोदशा स्पष्ट करें।

7(ग). आशय स्पष्ट कीजिए –

जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति में सांसारिक प्रशंसा और कवि की स्वतंत्र अभिव्यक्ति के बीच अंतर दिखाया गया है।
- उत्तर में दिए गए पद्यांश के शब्दों और उनके प्रसंग को आधार बनाकर भाव स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: संसार की स्वीकृति का आधार जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते का आशय है कि संसार उन्हीं लोगों को महत्त्व और प्रतिष्ठा देता है जो उसकी पसंद तथा अपेक्षाओं के अनुरूप बोलते या गाते हैं। यहाँ पूछने का अर्थ प्रश्न करना नहीं, बल्कि सम्मान देना और पहचान प्रदान करना है।

चरण 2: कवि की भिन्न दृष्टि इसके विपरीत कवि अपने मन का गान करता है। वह लोकप्रियता पाने के लिए संसार की रुचि के अनुसार अपनी अनुभूतियों को नहीं बदलता। अगली पंक्ति मैं अपने मन का गान किया करता हूँ बताती है कि उसके लिए अपने हृदय की सच्ची अभिव्यक्ति अधिक महत्त्वपूर्ण है।

चरण 3: निष्कर्ष संसार उन लोगों को सम्मान देता है जो उसकी पसंद की बातें करते हैं; कवि इस स्वीकृति की चिंता किए बिना अपने मन की सच्ची अनुभूतियाँ गाता है।

त्वरित सुझाव: पद्यांश के प्रमुख शब्द का लाक्षणिक अर्थ पहले बताएँ और फिर संबंधित अगली पंक्ति से कवि की मनोदशा स्पष्ट करें।

7(घ). 'साँसों के तार' से कवि का क्या तात्पर्य है ? आपके विचार से उन्हें किसने झंकृत किया होगा ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में जीवन और श्वास को वाद्य के तारों के रूप में देखा गया है।
- काव्यांश में प्रेम जीवन को संवेदना और संगीत प्रदान करता है।

चरण 1: प्रतीक का अर्थ 'साँसों के तार' से कवि का तात्पर्य अपने प्राणों, जीवन और उसकी भावनात्मक संवेदनाओं से है। जैसे वाद्य के तार छेड़े जाने पर संगीत उत्पन्न करते हैं, वैसे ही प्रेम का स्पर्श कवि के अंतर्मन में अनुभूतियों की तरंगें जगा देता है। यहाँ साँसों का उल्लेख केवल शारीरिक क्रिया के लिए नहीं, बल्कि अनुभव करने और प्रेम करने वाले जीवंत हृदय के लिए हुआ है।

चरण 2: झंकृत करने वाले का संकेत 'कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर' में किसी आत्मीय प्रिय व्यक्ति के प्रेमपूर्ण स्पर्श का संकेत है। मेरे विचार से कवि की प्रिया अथवा किसी अत्यंत प्रियजन के स्नेह ने उसके जीवन के इन तारों को झंकृत किया होगा। पद्यांश उस व्यक्ति का नाम नहीं बताता; इसलिए किसी निश्चित ऐतिहासिक व्यक्ति का नाम देना आवश्यक नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष साँसों के तार कवि के संवेदनशील जीवन और प्राणों का रूपक हैं। उन्हें किसी प्रिय व्यक्ति के प्रेम ने झंकृत किया है।

त्वरित सुझाव: तार, स्पर्श और झंकार को जोड़कर जीवन पर प्रेम के प्रभाव को समझाइए।

अथवा

7. प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

अट्टालिका नहीं है रे
आतंक-भवन
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर
रोग-शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर । [8 अंक]

7(क). कवि अट्टालिकाओं को आतंक भवन क्यों मानता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अट्टालिका का अर्थ ऊँचा भव्य भवन है; कविता में वह संपन्न वर्ग की सत्ता का प्रतीक है।
- 'आतंक-भवन' शब्द सामाजिक विषमता और शोषण के भय को सामने लाता है।

चरण 1: भव्य भवन के पीछे की व्यवस्था कवि अट्टालिकाओं को केवल रहने के सुंदर मकानों के रूप में नहीं देखता। वे धनवानों की वैभवपूर्ण जीवन-व्यवस्था का प्रतीक हैं, जिसके सामने साधारण निर्धन मनुष्य स्वयं को दबा हुआ अनुभव करता है। संपत्ति और अधिकार की असमानता इन भवनों को गरीबों के लिए भय तथा उत्पीड़न की याद में बदल देती है।

चरण 2: आतंक-भवन कहने का कारण इन अट्टालिकाओं में रहने वाला संपन्न वर्ग अपनी शक्ति और स्वार्थ के कारण गरीबों का शोषण करता है। इसलिए ये भवन जनसाधारण में सुरक्षा और अपनापन जगाने के स्थान पर आतंक पैदा करते हैं। 'अट्टालिका नहीं है रे / आतंक-भवन' कहकर कवि बाहरी भव्यता के भीतर छिपी अमानवीय सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अट्टालिकाएँ शोषक धनिक वर्ग की शक्ति और गरीबों पर उसके अत्याचार की प्रतीक हैं; इसलिए कवि उन्हें आतंक-भवन कहता है।

त्वरित सुझाव: भवन की ऊँचाई का वर्णन करने के साथ उसके सामाजिक प्रतीकार्थ को अवश्य जोड़िए।

7(ख). 'पंक' और 'जलज' का प्रतीकार्थ बताइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक में किसी दृश्य वस्तु के माध्यम से व्यापक सामाजिक अर्थ व्यक्त होता है।
- पंक और जलज का संबंध अभावग्रस्त परिवेश और उसमें पनपते कोमल जीवन से है।

चरण 1: पंक का प्रतीकार्थ 'पंक' का शाब्दिक अर्थ कीचड़ है। यहाँ यह दीन-हीन, गरीब और शोषित जनसमुदाय तथा उसकी अभावपूर्ण जीवन-परिस्थितियों का प्रतीक है। जिस प्रकार कीचड़ नीचे पड़ा रहता है और उपेक्षित माना जाता है, उसी प्रकार समाज का निर्धन वर्ग भी उपेक्षा और कठिनाइयों का भार सहता है।

चरण 2: जलज का प्रतीकार्थ 'जलज' का अर्थ जल में उत्पन्न कमल है। यहाँ छोटा खिला हुआ कमल अभावों के बीच जीने वाले बालक अथवा गरीब समाज के निष्कपट, आशावान जीवन का प्रतीक है। आगे 'रोग-शोक में भी हँसता है / शैशव का सुकुमार शरीर' कहना इसी अर्थ को पुष्ट करता है। पंक जैसी प्रतिकूल भूमि में भी जलज की प्रसन्नता जीवन की सहज शक्ति दिखाती है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक गरीब और शोषित जनजीवन का, तथा जलज उसी परिवेश में खिलते निश्छल बालजीवन और उसकी प्रसन्नता का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: शाब्दिक अर्थ बताकर शैशव वाली पंक्ति से दोनों प्रतीकों का सामाजिक अर्थ जोड़िए।

7(ग). आशय स्पष्ट कीजिए -

सदा पंक पर ही होता जल-विप्लव-प्लावन । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जल-विप्लव-प्लावन में वर्षा के जल का उमड़ना और क्रांति की हलचल दोनों अर्थ निहित हैं।
- पंक के माध्यम से कविता निर्धन और उपेक्षित जनजीवन की ओर संकेत करती है।

चरण 1: पंक्ति का दृश्य अर्थ वर्षा का जल धरती के निचले, कीचड़ वाले भागों में एकत्र होता है और उन्हें डुबो देता है। 'सदा पंक पर ही होता' इस प्राकृतिक दृश्य की ओर संकेत करता है। ऊपर उठी हुई अट्टालिकाओं और नीचे स्थित पंक का विरोध यह भी दिखाता है कि प्रकृति के प्रहार का भार नीचे रहने वालों को अधिक उठाना पड़ता है।

चरण 2: सामाजिक आशय प्रतीकात्मक रूप में पंक गरीब, पीड़ित और शोषित जनता है। सामाजिक हलचल तथा क्रांति का वास्तविक क्षेत्र यही अभावग्रस्त जनजीवन बनता है, क्योंकि परिवर्तन की आवश्यकता और बेचैनी सबसे अधिक उसी में होती है। जल का विप्लव जनक्रांति की शक्ति का संकेत भी देता है। कवि इस प्रकार नीचे समझे जाने वाले जनसमुदाय को परिवर्तन की केंद्रीय भूमि बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों में नीचे स्थित पंक पर जल के उमड़ने के माध्यम से गरीब जनजीवन पर पड़ते प्रहार और उसी में जन्म लेती क्रांति का संकेत है।

त्वरित सुझाव: जल और पंक के प्राकृतिक संबंध के बाद उनके क्रांति और निर्धन जनता वाले अर्थ खोलिए।

7(घ). शिशु का उल्लेख यहाँ क्यों किया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिशु का बिंब विपरीत परिस्थितियों में भी सहज प्रसन्नता का उदाहरण है।
- कमल और शिशु के माध्यम से कोमल जीवन की जिजीविषा उभरती है।

चरण 1: काव्यांश से आधार कवि कहता है कि शैशव का कोमल शरीर रोग और शोक में भी हँसता रहता है। शिशु कठिनाइयों का अनुभव करते हुए भी छल-कपट और संपत्ति की चिंता से दूर अपनी सहज मुसकान बचाए रखता है। यह उदाहरण बताता है कि प्रसन्नता केवल धन, सुविधा या बड़े भवन में रहने से प्राप्त नहीं होती।

चरण 2: उल्लेख का उद्देश्य शिशु का उल्लेख पंक के बीच खिले छोटे कमल की प्रसन्नता को स्पष्ट करने के लिए किया गया है। जैसे कमल कीचड़ में रहकर भी खिलता है, वैसे ही गरीबों के बच्चे अभाव और दुख में भी हँस लेते हैं। यह बिंब निर्धन जनजीवन की निष्कपटता, आशा तथा जीने की शक्ति को उभारता है। साथ ही संपन्न वर्ग की भयभीत जीवन-स्थिति के सामने सहज बाल-आनंद का मूल्य सामने आता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिशु अभाव और कष्ट के बीच भी बनी रहने वाली निश्छल हँसी तथा जिजीविषा का उदाहरण है; उसका उल्लेख कमल के बिंब को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: शिशु की मुसकान को रोग-शोक और कीचड़ में खिले कमल, दोनों से जोड़िए।

8. नीचे लिखे काव्य खण्ड को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

सुत बित नारि भवन परिवारा । होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ।।

अस विचारि जियँ जागहु ताता । मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ।। [6 अंक]

8(क). काव्यांश में प्रयुक्त भाषा एवं छन्द का नाम लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की पहचान शब्दों और क्रियारूपों के आधार पर की जाती है।
- चौपाई एक मात्रिक छंद है जिसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं।

चरण 1: प्रयुक्त भाषा की पहचान काव्यांश की भाषा अवधी है। 'सुत', 'बित', 'नारि', 'होहिं', 'जाहिं', 'जियँ' और 'मिलइ' जैसे शब्द और क्रियारूप अवधी की पहचान कराते हैं। विशेष रूप से 'जागहु ताता' जैसा संबोधन आत्मीयता और करुणा को सहज लोकभाषा में व्यक्त करता है। इसे आधुनिक खड़ी बोली अथवा ब्रजभाषा कहना उपयुक्त नहीं है।

चरण 2: छंद का नाम और स्वरूप इस काव्यांश में चौपाई छंद प्रयुक्त है। इसके चार चरण हैं और प्रत्येक चरण में 16 मात्राओं की योजना रहती है। पहले चरण का पाठ 'सुत बित नारि भवन परिवारा' है तथा उसके बाद 'होहिं जाहिं जग बारहिं बारा' दूसरा चरण है। मुद्रित पंक्ति में दो चरण साथ होने पर भी छंद का नाम चौपाई ही रहेगा। लय और चरणांत का साम्य विलाप को प्रवाह देता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा अवधी और छंद चौपाई है। चौपाई के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं।

त्वरित सुझाव: अवधी के क्रियारूप होहिं, जाहिं और मिलइ पहचानें; मुद्रित पंक्ति को एक चरण न मानें।

8(ख). प्रयुक्त अलंकार का नाम और दो उदाहरण लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- एक वर्ण की आवृत्ति से उत्पन्न ध्वनि-सौंदर्य को अनुप्रास अलंकार कहते हैं।
- उदाहरण में दोहराए गए वर्ण को दिखाना अलंकार की पहचान को स्पष्ट करता है।

चरण 1: अलंकार का नाम इस काव्यांश में अनुप्रास अलंकार है। कई शब्दों में समान व्यंजन की आवृत्ति के कारण कथन में लय और श्रुतिमधुरता आती है। प्रश्न के अनुसार इसी अलंकार के दो उदाहरण काव्यांश से लेने हैं। केवल अलंकार की परिभाषा लिख देना पर्याप्त नहीं; उद्धृत शब्दों में उसकी वास्तविक उपस्थिति भी दिखानी चाहिए।

चरण 2: दो उदाहरण और उनकी व्याख्या पहला उदाहरण 'बित ... बारहिं बारा' है। इन शब्दों में ब वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास बनता है; विशेष रूप से 'बारहिं बारा' का ध्वनि-साम्य स्पष्ट है। दूसरा उदाहरण 'जियँ जागहु' है, जिसमें ज वर्ण की आवृत्ति है। दोनों उदाहरण इसी दिए हुए काव्यांश से लिए गए हैं। इनकी ध्वन्यात्मक पुनरावृत्ति राम के करुण तथा आत्मीय कथन को एक लय में बाँधती है।

चरण 3: निष्कर्ष अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण हैं: 'बारहिं बारा' में ब वर्ण और 'जियँ जागहु' में ज वर्ण की आवृत्ति।

त्वरित सुझाव: दो अलग उदाहरण चुनकर प्रत्येक में आवृत्त व्यंजन स्पष्ट लिखिए।

8(ग). कविता का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में कथन की भावना, संबंध और उसके मानवीय प्रभाव को स्पष्ट करते हैं।
- इस प्रसंग में राम का लक्ष्मण के प्रति अनन्य भ्रातृप्रेम और करुण भाव प्रधान है।

चरण 1: संसार की वस्तुओं और भाई का अंतर राम कहते हैं कि पुत्र, धन, पत्नी, भवन और परिवार जैसी वस्तुएँ तथा संबंध संसार में बार-बार प्राप्त हो सकते हैं। इसके विपरीत सगा भाई फिर नहीं मिल सकता। यह कथन मूर्च्छित लक्ष्मण को देखकर राम के हृदय में उत्पन्न असह्य पीड़ा व्यक्त करता है। वे सहोदर भाई के संबंध को अतुलनीय और अन्य उपलब्धियों से बढ़कर मानते हैं।

चरण 2: करुणा और आत्मीयता का सौंदर्य 'अस विचारि जियँ जागहु ताता' में राम लक्ष्मण को अत्यंत आत्मीय संबोधन देकर जागने की प्रार्थना करते हैं। वीर राम यहाँ स्नेह से व्याकुल भाई के रूप में दिखाई देते हैं। उनकी विवश पुकार से करुण रस का संचार होता है। भाई के खो जाने की आशंका, उसकी अपूरणीयता और उसे जीवित देखने की तीव्र आकांक्षा इन पंक्तियों को मार्मिक बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य राम के अनन्य भ्रातृप्रेम, लक्ष्मण की अपूरणीयता और उन्हें जगाने की करुण पुकार में निहित है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में केवल अर्थ न लिखें; भ्रातृप्रेम और करुण रस का प्रभाव भी दिखाएँ।

अथवा

8. नीचे लिखे काव्य खण्ड को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
जो मुझको बदनाम करे हैं काश वे इतना सोच सकें ।
मेरा परदा खोले हैं या अपना परदा खोले हैं ।। [6 अंक]

8(क). कविता का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में निंदा करने वालों की मानसिकता पर व्यंग्य है।
- दूसरों के दोष खोलने से निंदक का अपना स्वभाव भी प्रकट होता है।

चरण 1: कथन का प्रत्यक्ष अर्थ कवि कहता है कि उसे बदनाम करने वाले यदि थोड़ा विचार करें तो समझ जाएँगे कि उसके दोष उजागर करते समय वे अपनी वास्तविकता भी उजागर कर रहे हैं। मेरा परदा खोले हैं या अपना परदा खोले हैं में यही आत्मविचार का आग्रह है।

चरण 2: निहित भाव और व्यंग्य दूसरे की प्रतिष्ठा गिराने की कोशिश निंदक के भीतर छिपी दुर्भावना, ईर्ष्या और संकीर्ण दृष्टि का परिचय देती है। इसीलिए कवि निंदा से विचलित होने के बजाय निंदकों को अपने आचरण का परिणाम सोचने को कहता है। काश में उनके विवेक जागने की इच्छा है। सहज कथन में आत्मसम्मान और संयम भी दिखाई देता है।

चरण 3: निष्कर्ष भाव-सौंदर्य यह है कि दूसरों को बदनाम करने वाला अपनी दुर्भावना का भेद स्वयं खोल देता है। कवि ने इस सत्य को संयत व्यंग्य और आत्मसम्मान के साथ व्यक्त किया है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ लिखते समय निंदा के साथ निंदक के अपने चरित्र के अनावृत होने का संबंध अवश्य जोड़ें।

8(ख). काव्यांश की भाषा की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यभाषा का सौंदर्य शब्द-चयन, बोलचाल, मुहावरे और कथन-शैली से बनता है।
- अल्प शब्दों में गहरे आशय की अभिव्यक्ति शेर की प्रभावशीलता बढ़ाती है।

चरण 1: सहज भाषा और शब्दावली काव्यांश की भाषा सरल, सहज और बोलचाल की हिंदुस्तानी है। मुझको, इतना और सोच सकें जैसे परिचित प्रयोग पाठक को सीधे संबोधित करते हैं। बदनाम और परदा जैसे उर्दू-फ़ारसी मूल के प्रचलित शब्द हिंदी के सामान्य शब्दों के साथ स्वाभाविक रूप से घुल गए हैं।

चरण 2: मुहावरे और कथन का प्रभाव परदा खोलना मुहावरे से भेद प्रकट करने की बात संक्षेप में कही गई है। करे हैं और खोले हैं में बोलचाल की क्रिया-रचना है। मेरा और अपना का आमना-सामना तथा प्रश्नात्मक कथन निंदक पर व्यंग्य को तीखा बनाते हैं। दोनों पंक्तियों का लयात्मक प्रवाह और कम शब्दों में गहरा अर्थ भाषा को प्रभावशाली बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सरल हिंदुस्तानी, बोलचाल की क्रियाएँ, मुहावरेदारी, लय और प्रश्नात्मक व्यंग्य इस काव्यांश की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा की प्रत्येक विशेषता के साथ काव्यांश का छोटा शब्द-उदाहरण दें, केवल विशेषणों की सूची न लिखें।

8(ग). 'परदा खोलना' का प्रयोग-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुहावरा अपने सामान्य शब्दार्थ से अलग लक्ष्यार्थ व्यक्त करता है।
- एक ही मुहावरे की आवृत्ति यहाँ निंदा करने वाले और निंदा सहने वाले का संबंध खोलती है।

चरण 1: मुहावरे का अर्थ परदा खोलना का अर्थ किसी का छिपा भेद अथवा वास्तविकता उजागर करना है। काव्यांश में कपड़े का परदा हटाने की कोई वास्तविक क्रिया नहीं है। निंदक कवि की कमियाँ प्रकट करके उसे बदनाम करना चाहते हैं; इसलिए कवि उनके इस व्यवहार के लिए यह मुहावरा प्रयोग करता है।

चरण 2: दोहरा आशय और व्यंग्य मेरा परदा और अपना परदा में उसी प्रयोग को दोहराकर कवि अर्थ पलट देता है। निंदक समझते हैं कि वे कवि का भेद खोल रहे हैं, जबकि उनके कथन उनकी अपनी दुर्भावना और संकीर्णता का भेद भी खोल देते हैं। छिपी वस्तु के सामने आ जाने का सहज बोध इस मानसिक प्रवृत्ति को मूर्त कर देता है। इस दोहरे संकेत से कथन संक्षिप्त, चुटीला और व्यंग्यपूर्ण बन गया है।

चरण 3: निष्कर्ष परदा खोलना के मुहावरे ने दोषोद्घाटन और निंदक के स्वयं उजागर होने का दोहरा अर्थ देकर शेर के व्यंग्य को सघन और प्रभावशाली बनाया है।

त्वरित सुझाव: मुहावरे का अर्थ बताने के बाद मेरा और अपना के बदलने से उत्पन्न व्यंग्य समझाएँ।

9(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कागज के पन्ने की तुलना छोटे चौकोने खेत से करने का आधार स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में कागज़ और खेत के बीच साम्य से काव्य-सृजन को समझाया गया है।
- खेती की प्रक्रिया और रचना की प्रक्रिया के समानांतर रूपक का विस्तार होता है।

चरण 1: आकार और सृजन का आधार कागज़ का पन्ना छोटा और चौकोर होता है; इसलिए उसका बाहरी आकार छोटे चौकोने खेत जैसा है। पर तुलना केवल आकृति तक सीमित नहीं है। खेत अन्न उत्पन्न करने की भूमि है, उसी प्रकार पन्ना कवि के भावों और विचारों को कविता का रूप देने की सृजनभूमि है। दोनों पर श्रम और पोषण से उपयोगी उपज पैदा होती है।

चरण 2: बीज से विकसित होने वाली फसल खेत में बोया बीज अनुकूल परिस्थितियों में अंकुरित होकर पौधे और फसल में बदलता है। कवि के भीतर किसी अनुभूति से भाव का बीज पड़ता है। कल्पना और संवेदना के सहारे वही भाव शब्दों, पंक्तियों और संपूर्ण कविता में विकसित होता है। कविता में शब्दों के अंकुर और रचना के विकसित रूप से खेती और काव्य-सृजन का यह साम्य स्पष्ट होता है।

चरण 3: कविता की विशिष्ट उपज अन्न की फसल कटकर समाप्त हो जाती है और उससे सीमित समय तक भूख मिटती है। इसके विपरीत कविता की रस-फसल पाठकों को बार-बार आनंद देती है। पाठक उसे जितना ग्रहण करते हैं, उसका आस्वाद उतना ही फैलता है। अतः छोटा पन्ना आकार में सीमित होते हुए भी ऐसी रचना का आधार बन जाता है जिसका आनंद निरंतर उपलब्ध रह सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष पन्ने और खेत की तुलना चौकोने आकार तथा सृजन के आधार पर की गई है। खेत की अन्न-फसल के समान पन्ने पर भाव, कल्पना और शब्दों से कविता की अक्षय रस-फसल तैयार होती है।

त्वरित सुझाव: तुलना में आकार के बाद भाव-बीज, कल्पना, शब्द और रस-फसल की पूरी सृजन-प्रक्रिया जोड़ें।

9(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

सिद्ध कीजिए कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील चित्रण है । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उषा का दृश्य अँधेरे से उजाले की ओर निरंतर बदलता है।
- ग्रामीण घरेलू जीवन के उपमान प्राकृतिक रंगों को परिचित दृश्य बनाते हैं।

चरण 1: गाँव के जीवन से लिए गए बिंब कविता में भोर के आकाश के लिए नीले शंख, राख से लीपे हुए गीले चौके और काली सिल पर केसर के रंग जैसे बिंब आते हैं। चौका, राख, सिल और केसर पीसने की क्रिया ग्रामीण घरेलू जीवन से जुड़ी हैं। ये उपमान सुबह को किसी दूर के अमूर्त दृश्य के बजाय गाँव के घर-आँगन में अनुभव होने वाला सजीव वातावरण बनाते हैं।

चरण 2: रंगों और प्रकाश का क्रमिक बदलाव आकाश का गहरा नीला रंग, अँधेरे की राख जैसी मटमैली छाया और क्षितिज पर केसर जैसी लाली एक ही क्षण में ठहरे नहीं रहते। स्लेट पर लाल खड़िया मलने का बिंब लालिमा के फैलाव का संकेत देता है। प्रकाश बढ़ने के साथ रंगों और दृश्य की बनावट बदलती जाती है। इसी क्रमिक परिवर्तन से उषा का चित्र गतिशील बनता है।

चरण 3: सूर्योदय के साथ दृश्य का खुलना नील जल में झिलमिलाती गौर देह जैसा बिंब उजाले की चमक और जीवंतता को व्यक्त करता है। अंत में सूर्योदय के साथ उषा का जादू टूटने की बात आती है। इससे स्पष्ट है कि कविता रात के अंतिम अँधेरे से सूर्योदय तक की प्रक्रिया दिखाती है। घरेलू ग्रामीण उपमान और समय के साथ बदलता प्रकाश मिलकर गाँव की सुबह का आत्मीय और गतिशील चित्र रचते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष उषा में ग्रामीण जीवन के परिचित बिंबों के माध्यम से आकाश के बदलते रंग और बढ़ते प्रकाश दिखाए गए हैं। सूर्योदय तक चलता यह परिवर्तन उसे गाँव की सुबह का गतिशील चित्र बनाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में ग्रामीण उपमानों के साथ रंग बदलने और सूर्योदय तक पहुँचने का क्रम भी दिखाएँ।

9(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कैमरे में बन्द अपाहिज कविता कुछ लोगों की संवेदनहीनता प्रकट करती है, कैसे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता करुणा के प्रदर्शन और वास्तविक मानवीय संवेदना के अंतर को उजागर करती है।
- दिव्यांग व्यक्ति की पीड़ा को प्रसारण की सामग्री बनाना उसके सम्मान की उपेक्षा है।

चरण 1: दुख को तमाशे में बदलना कविता में दूरदर्शन का साक्षात्कारकर्ता अपाहिज व्यक्ति के दुख को समझने और उसकी सहायता करने की जगह कैमरे के सामने प्रदर्शित करना चाहता है। वह उसके शरीर और दुख के बारे में बार-बार प्रश्न करता है। प्रश्नों का ढंग ऐसा है मानो सामने बैठा मनुष्य स्वतंत्र व्यक्ति न होकर कार्यक्रम को करुणाजनक बनाने का साधन हो।

चरण 2: भावनाओं पर नियंत्रण की कोशिश साक्षात्कारकर्ता उस व्यक्ति से अपनी पीड़ा का वर्णन करवाना और उसके चेहरे पर दुख की अभिव्यक्ति पकड़ना चाहता है। वह आँसू और भावुक दृश्य प्राप्त करने की जल्दी में है। उसकी अपेक्षा के अनुरूप भाव न उभरने पर वह और दबाव बनाता है। इस व्यवहार में व्यक्ति की झिझक, आत्मसम्मान और मानसिक कष्ट के प्रति धैर्य या सहानुभूति नहीं है।

चरण 3: दर्शकों और माध्यम पर व्यंग्य कार्यक्रम बनाने वाले दर्शकों को भी भावुक करना चाहते हैं, ताकि प्रसारण प्रभावशाली दिखाई दे। इस प्रकार एक मनुष्य की निजी पीड़ा माध्यम की सफलता और दर्शकों की क्षणिक करुणा का साधन बनती है। कवि इस बनावटी सामाजिक उद्देश्य पर व्यंग्य करता है। वास्तविक संवेदना पीड़ित के सम्मान और आवश्यकताओं को समझती, जबकि यहाँ उसके दुख के दृश्य को महत्व दिया जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता उन लोगों की संवेदनहीनता खोलती है जो अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को समझने के स्थान पर उसे कैमरे के लिए भावुक तमाशा बनाते हैं। उनकी दिखाई जाने वाली करुणा में उसके आत्मसम्मान का ध्यान नहीं है।

त्वरित सुझाव: संवेदनहीनता सिद्ध करने के लिए प्रश्नों के दबाव, आँसू पाने की चाह और दर्शकों को भावुक करने के उद्देश्य को जोड़ें।

---

10. नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बाज़ार में एक जादू है । वह जादू आँख की राह काम करता है । वह रूप का जादू है पर जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है । जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है । जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा । मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमन्त्रण उस तक पहुँच जाएगा । कहीं उस वक्त जेब भरी हो तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है ! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ । सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है । पर यह सब जादू का असर है । जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी चीज़ों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है । थोड़ी देर को स्वाभिमान को ज़रूर सेंक मिल जाता है । पर इससे अभिमान की गिल्टी को और खुराक ही मिलती है । जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ होगी ? [8 अंक]

10(क). बाज़ार के जादू से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त कथन और उसके प्रसंग से उत्तर का आधार निर्धारित करना।
- प्रत्यक्ष कथन के साथ उसका आशय स्पष्ट करना और उत्तर को प्रश्न के केंद्र तक सीमित रखना।

चरण 1: बाज़ार के जादू का अर्थ गद्यांश में बाज़ार के जादू को आँख की राह काम करने वाला रूप का जादू कहा गया है। आकर्षक वस्तुओं का प्रदर्शन व्यक्ति को अपनी ओर खींचता है और उसके मन में उन्हें खरीदने की इच्छा जगा देता है।

चरण 2: कथन का स्पष्टीकरण इस आकर्षण के कारण व्यक्ति को हर वस्तु आवश्यक और आराम बढ़ाने वाली लगती है। वह अपनी वास्तविक जरूरत भूलकर सोचता है कि यह भी ले लूँ और वह भी ले लूँ। वस्तुओं का यही सम्मोहक प्रभाव बाज़ार का जादू है। लेखक इसे वास्तविक जादू नहीं मानता, बल्कि ऐसा दृश्य आकर्षण बताता है जो खरीदार के विवेक को ढक देता है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार के जादू से तात्पर्य वस्तुओं के रूप और आकर्षक प्रदर्शन के उस सम्मोहन से है, जो व्यक्ति को अनावश्यक वस्तुएँ खरीदने के लिए ललचाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में आँख, रूप का आकर्षण और अनावश्यक खरीद की इच्छा का संबंध स्पष्ट करें।

10(ख). बाज़ार का जादू कब अधिक प्रभावी होता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त कथन और उसके प्रसंग से उत्तर का आधार निर्धारित करना।
- प्रत्यक्ष कथन के साथ उसका आशय स्पष्ट करना और उत्तर को प्रश्न के केंद्र तक सीमित रखना।

चरण 1: जादू के प्रभाव की परिस्थिति लेखक स्पष्ट करता है कि जेब भरी हो और मन खाली हो तो बाज़ार का जादू खूब असर करता है। यहाँ मन खाली होने का आशय अपनी जरूरतों का स्पष्ट बोध और मन का संतोष न होना है। ऐसी दशा में अनेक वस्तुओं का निमंत्रण मन तक पहुँच जाता है।

चरण 2: कथन का स्पष्टीकरण भरी जेब व्यक्ति को इच्छित वस्तुएँ खरीदने की सुविधा देती है। खाली मन उन इच्छाओं पर अंकुश नहीं लगा पाता, इसलिए हर वस्तु जरूरी और सुखद दिखाई देती है। खरीदने की सामर्थ्य और अनियंत्रित चाह मिलकर जादू को अधिक प्रभावी बनाती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू भरी जेब और खाली मन की स्थिति में सबसे अधिक प्रभावी होता है, क्योंकि तब व्यक्ति के पास खरीदने का धन होता है और अपनी जरूरतों का विवेक इच्छाओं को नियंत्रित नहीं कर पाता।

त्वरित सुझाव: कब के उत्तर में परिस्थिति लिखें और क्यों के उत्तर में धन तथा अनियंत्रित इच्छा का संबंध जोड़ें।

10(ग). जादू का प्रभाव समाप्त होने पर क्या अनुभव होता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त कथन और उसके प्रसंग से उत्तर का आधार निर्धारित करना।
- प्रत्यक्ष कथन के साथ उसका आशय स्पष्ट करना और उत्तर को प्रश्न के केंद्र तक सीमित रखना।

चरण 1: आकर्षण उतरने के बाद का अनुभव आकर्षण के समय सभी वस्तुएँ उपयोगी और आराम बढ़ाने वाली लगती हैं। किंतु सम्मोहन उतरने के बाद व्यक्ति उनकी वास्तविक उपयोगिता पर विचार कर पाता है। उसे अनुभव होता है कि खरीदी गई फैंसी वस्तुओं की बहुतायत आवश्यक नहीं थी।

चरण 2: कथन का स्पष्टीकरण गद्यांश के अनुसार फैंसी वस्तुओं की अधिकता आराम में सहायता देने के बजाय उसमें खलल डालती है। उनसे मिलने वाला प्रतिष्ठा का सुख भी क्षणिक होता है। वे थोड़ी देर को स्वाभिमान को संतुष्टि देती हैं, पर वास्तव में अभिमान और संग्रह की जकड़ बढ़ाती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जादू उतरने पर अनुभव होता है कि फैंसी वस्तुओं की अधिकता आराम बढ़ाने के बजाय बाधा बन गई है और उनसे मिला क्षणिक संतोष केवल अभिमान को बढ़ाता है।

त्वरित सुझाव: आकर्षण के समय की धारणा और बाद में अनुभव होने वाली असुविधा को अलग करके लिखें।

10(घ). आशय स्पष्ट कीजिए 'अभिमान की गिल्टी को और खुराक मिलती है ।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त कथन और उसके प्रसंग से उत्तर का आधार निर्धारित करना।
- प्रत्यक्ष कथन के साथ उसका आशय स्पष्ट करना और उत्तर को प्रश्न के केंद्र तक सीमित रखना।

चरण 1: अभिमान की गिल्टी का आशय गिल्टी शरीर में बनी गाँठ को कहते हैं। लेखक ने अभिमान को ऐसी ही गाँठ के रूप में प्रस्तुत किया है। आकर्षक और फैंसी वस्तुएँ खरीदकर व्यक्ति थोड़ी देर के लिए अपने को बड़ा और प्रतिष्ठित अनुभव करता है; उसे लगता है कि वस्तुओं के कारण उसका महत्व बढ़ गया है।

चरण 2: कथन का स्पष्टीकरण वस्तुओं से मिलने वाली यह तुष्टि वास्तविक आत्मसम्मान को स्थायी आधार नहीं देती। वह संपत्ति और प्रदर्शन से जुड़े अहंकार को और बढ़ाती है। खुराक मिलने का आशय है कि अभिमान की गाँठ को पनपने और मजबूत होने का अवसर मिल जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन का आशय है कि फैंसी वस्तुओं का संग्रह व्यक्ति के दिखावे और अहंकार को बढ़ाता है; वस्तुओं से मिली क्षणिक तुष्टि अभिमान की गाँठ को और मजबूत करती है।

त्वरित सुझाव: गिल्टी का रूपक समझाते हुए वस्तु-संग्रह से बढ़ने वाले अहंकार को उत्तर का केंद्र बनाएँ।

अथवा

10. नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

दोनों ही लड़के राज-दरबार के भावी पहलवान घोषित हो चुके थे । अत: दोनों का भरण-पोषण दरबार से ही हो रहा था । प्रतिदिन प्रात:काल पहलवान स्वयं ढोलक बजाकर दोनों से कसरत करवाता । दोपहर में, लेटे-लेटे दोनों को सांसारिक ज्ञान की भी शिक्षा देता – "समझे ! ढोलक की आवाज पर पूरा ध्यान देना । हाँ, मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है, समझे ! ढोल की आवाज के प्रताप से ही मैं पहलवान हुआ उतरकर सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करना, समझे !" ऐसी ही बहुत सी बातें वह कहा करता । फिर कैसे खुश रखा जाता है, कब कैसा व्यवहार करना चाहिए, आदि की शिक्षा वह नित्य दिया करता था । [8 अंक]

10(क). पहलवान के बेटों का भरण-पोषण राज-दरबार से क्यों होता था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त कथन और उसके प्रसंग से उत्तर का आधार निर्धारित करना।
- प्रत्यक्ष कथन के साथ उसका आशय स्पष्ट करना और उत्तर को प्रश्न के केंद्र तक सीमित रखना।

चरण 1: राजकीय संरक्षण का कारण गद्यांश की आरंभिक पंक्ति में कहा गया है कि दोनों लड़के राज-दरबार के भावी पहलवान घोषित हो चुके थे। इसलिए उनका संबंध दरबार से केवल पहलवान के पुत्र होने के कारण नहीं, बल्कि भविष्य में दरबार का प्रतिनिधित्व करने वाले पहलवानों के रूप में जुड़ गया था।

चरण 2: कथन का स्पष्टीकरण उन्हें भविष्य की इस भूमिका के लिए तैयार करना था। दरबार से उनका भरण-पोषण इसी राजकीय संरक्षण के अंतर्गत हो रहा था। पहलवान स्वयं प्रतिदिन ढोलक बजाकर उनसे कसरत करवाता था, जिससे उनके प्रशिक्षण और भावी दायित्व का संबंध भी स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष पहलवान के दोनों बेटे राज-दरबार के भावी पहलवान घोषित किए जा चुके थे। इसी कारण दरबार उनके पालन-पोषण का खर्च उठाता था।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय भावी राज-दरबारी पहलवान घोषित होने की बात अवश्य लिखें।

10(ख). पहलवान अपने पुत्रों को क्या शिक्षा दिया करता था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त कथन और उसके प्रसंग से उत्तर का आधार निर्धारित करना।
- प्रत्यक्ष कथन के साथ उसका आशय स्पष्ट करना और उत्तर को प्रश्न के केंद्र तक सीमित रखना।

चरण 1: पुत्रों को दी जाने वाली शिक्षा पहलवान अपने बेटों को प्रतिदिन ढोलक बजाकर कसरत करवाता था और उन्हें ढोल की आवाज पर पूरा ध्यान देना सिखाता था। वह ढोल को अपना गुरु बताकर अखाड़े में उतरते समय सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करने की शिक्षा देता था। इससे प्रशिक्षण के साथ गुरु के प्रति आदर जुड़ा हुआ था।

चरण 2: कथन का स्पष्टीकरण दोपहर में वह उन्हें सांसारिक व्यवहार का ज्ञान भी देता था। वह समझाता था कि दूसरों को कैसे खुश रखा जाता है और अलग-अलग अवसरों पर कैसा व्यवहार करना चाहिए। इस प्रकार उसकी शिक्षा शरीर को साधने, ढोल की प्रेरणा ग्रहण करने और व्यवहारकुशल बनने से संबंधित थी।

चरण 3: निष्कर्ष वह पुत्रों को कसरत, ढोल की आवाज पर ध्यान देने और अखाड़े में ढोलों को प्रणाम करने की शिक्षा देता था। साथ ही लोगों को खुश रखने तथा अवसर के अनुसार उचित व्यवहार करने का सांसारिक ज्ञान भी देता था।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शारीरिक प्रशिक्षण और सांसारिक व्यवहार, दोनों प्रकार की शिक्षा शामिल करें।

10(ग). लुट्टन किसे अपना गुरु मानता था और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त कथन और उसके प्रसंग से उत्तर का आधार निर्धारित करना।
- प्रत्यक्ष कथन के साथ उसका आशय स्पष्ट करना और उत्तर को प्रश्न के केंद्र तक सीमित रखना।

चरण 1: गुरु के प्रति श्रद्धा लुट्टन किसी पहलवान को नहीं, बल्कि ढोल को अपना गुरु मानता था। वह अपने पुत्रों से स्वयं कहता है कि उसका गुरु यही ढोल है। इसलिए गुरु की पहचान केवल किसी अन्य प्रशिक्षक अथवा कुश्ती सिखाने वाले मनुष्य से जोड़ना इस गद्यांश के कथन को बदल देना होगा।

चरण 2: कथन का स्पष्टीकरण उसका विश्वास था कि वह ढोल की आवाज के प्रताप से ही पहलवान बना है। ढोल की ध्वनि उसके लिए कुश्ती की प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत थी। इसी श्रद्धा के कारण वह बेटों को ढोल की आवाज पर ध्यान देने और अखाड़े में उतरकर सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करने को कहता था।

चरण 3: निष्कर्ष लुट्टन ढोल को अपना गुरु मानता था, क्योंकि उसके अनुसार ढोल की आवाज की प्रेरणा और प्रताप से ही वह पहलवान बना था।

त्वरित सुझाव: किसे और क्यों, दोनों का उत्तर दें तथा ढोल को प्रणाम करने वाली बात से श्रद्धा स्पष्ट करें।

10(घ). आज गाँवों में अखाड़े समाप्त हो रहे हैं, इसके क्या कारण हो सकते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त कथन और उसके प्रसंग से उत्तर का आधार निर्धारित करना।
- प्रत्यक्ष कथन के साथ उसका आशय स्पष्ट करना और उत्तर को प्रश्न के केंद्र तक सीमित रखना।

चरण 1: अखाड़ों के क्षय के संभावित कारण गद्यांश में अखाड़े की परंपरा को नियमित कसरत, ढोलक की प्रेरणा, पिता के प्रशिक्षण और दरबार के संरक्षण से जुड़ा दिखाया गया है। इससे समझ आता है कि ऐसी परंपरा को चलाने के लिए समय, प्रशिक्षक और आर्थिक सहयोग आवश्यक होते हैं। इन आधारों के कमजोर होने पर अखाड़े टिक नहीं पाते।

चरण 2: कथन का स्पष्टीकरण आज गाँवों में रोजगार के लिए पलायन, खेती और अन्य कामों में व्यस्तता तथा खेल की रुचियों में बदलाव अखाड़ों की उपेक्षा के संभावित कारण हो सकते हैं। प्रशिक्षकों, मैदानों और आर्थिक संरक्षण का अभाव भी नियमित अभ्यास में बाधा डालता है। मनोरंजन के नए साधन युवाओं का समय बाँटते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष गाँवों में अखाड़े घटने के कारण युवाओं का पलायन, जीवनचर्या और खेल-रुचियों में बदलाव तथा प्रशिक्षकों, स्थान और आर्थिक संरक्षण की कमी हो सकती है। इनसे नियमित कुश्ती-अभ्यास की परंपरा कमजोर होती है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न संभावित कारण पूछता है; जीवनचर्या, रुचि और संरक्षण से जुड़े ठोस कारण दें।

11(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो गईं, कैसे ? सोदाहरण लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन अपने ग्रामीण संस्कारों और रहन-सहन पर दृढ़ रहने वाली स्त्री है।
- संस्मरण में महादेवी के भोजन और आदतों में आए परिवर्तन भक्तिन के प्रभाव को स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: भक्तिन के दृढ़ स्वभाव को समझें महादेवी के साथ रहने पर भी भक्तिन ने अपनी देहाती आदतें सहज ही नहीं छोड़ीं। वह अपनी पसंद और जीवन-पद्धति को उचित मानती थी तथा लेखिका के जीवन में भी उन्हें स्थान दिला देती थी। इसलिए दोनों के साहचर्य का प्रभाव केवल भक्तिन के शहरी बनने में दिखाई नहीं देता; महादेवी की दिनचर्या में भी ग्रामीण सादगी बढ़ती जाती है।

चरण 2: भोजन के उदाहरण से प्रभाव स्पष्ट करें भक्तिन के प्रभाव से महादेवी ने देहाती भोजन का स्वाद पहचानना और उसे पसंद करना सीख लिया। वह मकई के दलिये के साथ मट्ठा पीने लगीं और बाजरे के तिलवाले पुए खाने लगीं। ज्वार के भुने भुट्टे की खिचड़ी तथा सफेद महुए की लपसी को भी उन्होंने अपने भोजन में स्थान दिया। ये व्यंजन ग्रामीण जीवन से जुड़े हैं। इस प्रकार भक्तिन ने लेखिका की भोजन संबंधी शहरी पसंद को अपने देहाती स्वाद की ओर मोड़ दिया। महादेवी का यह परिवर्तन भक्तिन के प्रति उनके विश्वास और आत्मीयता का भी प्रमाण है। दोनों के संबंध में केवल सेविका और स्वामिनी का औपचारिक अंतर नहीं रह गया था।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन की संगति में महादेवी का रहन-सहन अधिक सादा और भोजन अधिक ग्रामीण हो गया। मकई का दलिया, मट्ठा, बाजरे के पुए और महुए की लपसी इसके ठोस उदाहरण हैं।

त्वरित सुझाव: इस उत्तर में केवल देहाती होने का अर्थ न बताएँ; भोजन के दो-तीन सटीक उदाहरण देकर भक्तिन का प्रभाव स्पष्ट करें।

11(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'गगरी फूटी – बैल पियासा' से लेखक का क्या आशय है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोककथन का शाब्दिक चित्र उसके व्यापक सामाजिक आशय को खोलता है।
- जल का अपव्यय और आवश्यक स्थान तक उसका न पहुँचना संसाधनों के असमान उपयोग का संकेत है।

चरण 1: लोककथन का प्रत्यक्ष अर्थ बताएँ 'गगरी फूटी – बैल पियासा' का प्रत्यक्ष चित्र यह है कि पानी रखने वाली गगरी टूट गई और

उसका पानी व्यर्थ बह गया, किंतु पानी की आवश्यकता वाला बैल प्यासा ही रह गया। पानी उपलब्ध होने पर भी वह जरूरतमंद तक नहीं पहुँचा। कथन इस विरोधाभास को उभारता है कि साधन नष्ट होते रहें और जिस आवश्यकता की पूर्ति के लिए वे हैं, वह अधूरी रह जाए।

चरण 2: लेखक का सामाजिक आशय स्पष्ट करें लेखक इस उक्ति के माध्यम से देश की स्थिति पर व्यंग्य करता है। देश के विकास के लिए योजनाओं और संसाधनों पर बहुत खर्च होता है, फिर भी आम जनता की मूल जरूरतें पूरी नहीं हो पातीं। धन और साधन अनुत्पादक ढंग से खर्च या बर्बाद हो जाते हैं; उनके लाभ से वंचित व्यक्ति अभाव में रहता है। जैसे बहता पानी प्यासे बैल के काम नहीं आता, वैसे ही कुप्रबंध के कारण विकास का खर्च जरूरतमंदों की राहत नहीं बन पाता। इसीलिए इस कथन में केवल पानी के नष्ट होने का दुख नहीं, व्यवस्था की निष्फलता पर तीखा प्रश्न भी निहित है।

चरण 3: निष्कर्ष इस उक्ति का आशय संसाधनों की बर्बादी और जनता की अधूरी आवश्यकताओं की विडंबना है। लेखक ऐसी व्यवस्था पर चोट करता है जिसमें व्यय तो बहुत होता है, पर उसका लाभ सही व्यक्ति तक नहीं पहुँचता।

त्वरित सुझाव: पहले गगरी और प्यासे बैल का विरोध बताइए, फिर उसे योजनाओं के खर्च और जनता के अभाव से जोड़िए।

11(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

उन संघर्षों का उल्लेख कीजिए जिनसे टकराते-टकराते चार्ली चैप्लिन के व्यक्तित्व में निखार आता चला गया । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली के हास्य में उनके अभावग्रस्त जीवन की करुणा भी समाहित है।
- व्यक्तिगत संघर्ष उनकी संवेदनशीलता और साधारण मनुष्य से जुड़ाव को समझने का आधार हैं।

चरण 1: बचपन के अभावों का उल्लेख करें चार्ली चैप्लिन का बचपन गरीबी और असुरक्षा के बीच बीता। पिता से मिलने वाले सहारे का अभाव, माँ की बीमारी तथा आर्थिक तंगी ने उन्हें बहुत कम उम्र में जीवन की कठोरता से परिचित करा दिया। भूख, दूसरों पर निर्भरता और रहने-खाने की अनिश्चितता उनके लिए केवल सुनी हुई बातें नहीं थीं। इन परिस्थितियों ने उन्हें दुख सहने की शक्ति दी और अभावग्रस्त लोगों की पीड़ा समझना सिखाया।

चरण 2: संघर्ष का व्यक्तित्व और अभिनय से संबंध बताएँ चार्ली ने अपमान, सामाजिक विषमता और काम पाने की कठिनाइयों का भी सामना किया। मंच और सिनेमा में जगह बनाने के लिए उन्हें निरंतर परिश्रम करना पड़ा। इन अनुभवों ने उनकी निरीक्षण-शक्ति तथा मानवीय संवेदना को गहरा किया। उन्होंने सामान्य, असहाय मनुष्य की बेबसी को अपने अभिनय का केंद्र बनाया। उनके पात्र का गिरना, ठोकर खाना और फिर उठ खड़ा होना हँसी भी उत्पन्न करता है और करुणा भी। इसी कारण उनका हास्य जीवन के दुख को पहचानता हुआ हास्य बन पाया।

चरण 3: निष्कर्ष गरीबी, भूख, पारिवारिक संकट, अपमान और कलाकार के रूप में स्थापित होने के संघर्षों ने चार्ली को अधिक संवेदनशील, जुझारू और मानवीय बनाया। इन्हीं अनुभवों से उनकी विशिष्ट हास्य-कला निखरी।

त्वरित सुझाव: संघर्षों की सूची के साथ यह अवश्य बताएँ कि उन्हीं से चार्ली के हास्य में करुणा और आम आदमी के प्रति संवेदना आई।

11(घ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'नमक' कहानी में क्या संदेश छिपा हुआ है ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी राजनीतिक सीमाओं के पार जीवित मानवीय संबंधों को सामने लाती है।
- नमक जन्मभूमि की स्मृति, आत्मीयता और साझा सांस्कृतिक जीवन का प्रतीक है।

चरण 1: नमक के प्रसंग से संदेश पहचानें कहानी में सिख बीबी के लिए लाहौर का नमक केवल खाने की वस्तु नहीं है। वह उनकी जन्मभूमि और उससे जुड़ी आत्मीय स्मृतियों का प्रतीक है। सफ़िया उनकी इच्छा पूरी करने के लिए नमक लाने का निश्चय करती है। यह संवेदनशील व्यवहार दिखाता है कि अलग धर्म और अलग देश के होने पर भी लोग एक-दूसरे की भावनाओं को अपना मान सकते हैं।

चरण 2: सीमा और मनुष्य के संबंध का अर्थ खोलें नमक को सीमा के पार लाने के प्रसंग में अधिकारियों के व्यवहार से भी पुराने स्थानों के प्रति लगाव और मनुष्यता सामने आती है। देश-विभाजन ने राजनीतिक सीमाएँ बना दीं, किंतु लोगों के मन में बसे घर, शहर और अपनेपन की भावना को नहीं मिटाया। कहानी बताती है कि धार्मिक भेद, राष्ट्रीय पहचान और कठोर नियमों के पीछे भी संवेदना से भरे मनुष्य हैं। परस्पर विश्वास और दूसरे के दुख को समझने की क्षमता नफरत की दीवारों को कमजोर कर सकती है। नमक का छोटा-सा उपहार इसी बड़े मानवीय सत्य को मूर्त करता है और मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का माध्यम बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'नमक' का संदेश है कि प्रेम, भाईचारा और मानवीय संवेदना राजनीतिक सीमाओं तथा धार्मिक भेदों से अधिक गहरे हैं। विभाजन धरती का हो सकता है, साझा स्मृतियों और आत्मीय संबंधों का नहीं।

त्वरित सुझाव: नमक को केवल खाद्य पदार्थ न मानें; सिख बीबी की लाहौर की स्मृति और सफ़िया की आत्मीयता से कहानी का संदेश जोड़ें।

11(ङ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

डॉ. आम्बेडकर के मतानुसार दासता की व्यापक परिभाषा क्या है ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दासता केवल कानूनी गुलामी नहीं, व्यक्ति की स्वतंत्र पसंद पर सामाजिक नियंत्रण भी है।
- पेशा चुनने की स्वतंत्रता और अपनी क्षमता विकसित करने का अवसर व्यक्ति की स्वतंत्रता के अंग हैं।

चरण 1: सीमित और व्यापक अर्थ का अंतर समझें डॉ. आम्बेडकर के अनुसार दासता का अर्थ केवल वह कानूनी व्यवस्था नहीं है जिसमें कोई व्यक्ति दूसरे मनुष्य की संपत्ति बना दिया जाता है। इसका व्यापक अर्थ ऐसी सामाजिक स्थिति से है जिसमें कुछ लोगों को दूसरों के बनाए उद्देश्यों और नियमों को स्वीकार करके जीवन बिताने के लिए विवश होना पड़ता है। जब मनुष्य अपने जीवन की दिशा स्वयं तय नहीं कर सकता, तो कानूनी रूप से स्वतंत्र दिखने पर भी उसकी स्वतंत्रता अधूरी रहती है।

चरण 2: जाति-आधारित पेशे के उदाहरण से स्पष्ट करें जाति-प्रथा में व्यक्ति का काम उसकी रुचि, योग्यता और चुनाव से निर्धारित होने के बजाय जन्म से तय कर दिया जाता है। समाज किसी जाति को एक खास पेशे में बाँध देता है और दूसरा काम चुनने से रोकता है। इस प्रकार व्यक्ति को दूसरों द्वारा निश्चित उद्देश्य के अनुसार श्रम करना पड़ता है। परिस्थितियाँ बदलने पर भी पेशा न बदल सकना उसकी आजीविका और प्रतिभा दोनों को बाधित करता है। आम्बेडकर इस सामाजिक विवशता को भी दासता मानते हैं, क्योंकि इसमें निर्णय लेने का अधिकार छिन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष आम्बेडकर की दृष्टि में दूसरों द्वारा निर्धारित जीवन-पद्धति और पेशे को विवश होकर अपनाना भी दासता है। जन्म के आधार पर पेशा थोपने वाली सामाजिक व्यवस्था इस व्यापक दासता का उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में दूसरों द्वारा निर्धारित उद्देश्य स्वीकार करने की विवशता लिखें और उसे जाति से बँधे पेशे के उदाहरण से समझाएँ।

12(क). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

पीटर के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जो ऐन को पसंद नहीं हैं । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पात्र के गुण-दोषों का निर्धारण ऐन की अपनी टिप्पणी से करना चाहिए।
- किसी व्यक्ति के प्रति स्नेह होने पर भी उसके विचार और व्यवहार अप्रिय लग सकते हैं।

चरण 1: धर्म के प्रति दृष्टिकोण पीटर के स्वभाव की पहली बात जो ऐन को पसंद नहीं है, वह धर्म के प्रति उसकी नफ़रत है। ऐन उसके ऐसे दृष्टिकोण से सहमत नहीं है। यह बात पीटर के बारे में ऐन के मूल्यांकन में स्पष्ट रूप से आती है; इसलिए उत्तर में उसके सामान्य संकोची स्वभाव के बजाय इसी विशिष्ट प्रवृत्ति का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 2: खाने संबंधी व्यवहार दूसरी बात खाने के बारे में उसका बातें करना और उसका व्यवहार है, जो ऐन को खटकता है। ऐन पीटर को अच्छा और भला लड़का मानती है तथा उसके प्रति गहरा लगाव भी रखती है, फिर भी ये दोनों बातें उसे निराश करती हैं। अतः उसकी नाराज़गी को पीटर के संपूर्ण व्यक्तित्व के प्रति घृणा नहीं समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष ऐन को पीटर की धर्म के प्रति नफ़रत और खाने के बारे में उसकी बातें अथवा उसका व्यवहार पसंद नहीं है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पाठ की दो स्पष्ट बातें लिखें: धर्म के प्रति नफ़रत और खाने संबंधी व्यवहार।

12(ख). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व ज़्यादा था' – टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक वस्तुओं से सभ्यता की कलात्मक अभिरुचि पहचानी जाती है।
- कला का महत्त्व दैनिक उपयोग की वस्तुओं के सौंदर्य में भी दिखाई देता है।

चरण 1: वस्तुओं में कलात्मकता सिंधु घाटी से प्राप्त नर्तकी की कांस्य मूर्ति, मुहरें, खिलौने और सुंदर मृद्भांड लोगों की विकसित कलादृष्टि के प्रमाण हैं। इन वस्तुओं में आकृति, अनुपात और बारीक कारीगरी पर ध्यान दिया गया है। आभूषणों तथा सजे हुए बर्तनों से भी पता चलता है कि सुंदरता केवल किसी विशेष वर्ग की वस्तुओं तक सीमित नहीं थी।

चरण 2: जीवन में सुरुचि नगर-योजना, व्यवस्थित सड़कें, स्नानागार और जलनिकासी की व्यवस्था उनके सुव्यवस्थित जीवन-बोध को दिखाती हैं। वहाँ भव्य राजमहलों और विराट सत्ता-प्रदर्शक स्मारकों की अपेक्षा नागरिक जीवन तथा उपयोगी वस्तुओं की सुंदरता उभरती है। इसलिए लेखक इस सभ्यता में ताकत के प्रदर्शन से अधिक कला और सुरुचि को महत्त्वपूर्ण मानता है।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु सभ्यता की मूर्तियाँ, मुहरें, आभूषण, बर्तन और सुव्यवस्थित नागरिक जीवन सिद्ध करते हैं कि उसमें कला तथा सुरुचि का विशेष महत्त्व था।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी को ठोस बनाने के लिए एक कलाकृति और एक नागरिक व्यवस्था का उदाहरण अवश्य दें।

12(ग). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'जूझ' के लेखक का पिता बेटे की पढ़ाई-लिखाई के पक्ष में क्यों नहीं था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पिता का विरोध खेती के लिए बेटे के श्रम की आवश्यकता से जुड़ा है।
- आनंद की शिक्षा की आकांक्षा और पिता की तत्कालिक आर्थिक दृष्टि में संघर्ष है।

चरण 1: खेती के लिए श्रम की अपेक्षा आनंद के पिता चाहते थे कि बेटा खेती के काम में लगा रहे। खेत में पानी देना, पशुओं की देखभाल और अन्य कृषि-कार्य उसके जिम्मे रहते थे। उसके विद्यालय जाने पर ये काम प्रभावित होते और पिता को स्वयं अधिक मेहनत करनी पड़ती। इसलिए वे बेटे को पढ़ाई से हटाकर खेत में लगाना अपने लिए सुविधाजनक समझते थे।

चरण 2: पढ़ाई को अनुपयोगी समझना पिता पढ़ाई-लिखाई को उपयोगी भविष्य का साधन नहीं मानते थे। उन्हें लगता था कि खेती छोड़कर स्कूल जाने से तत्काल कोई लाभ नहीं होगा और परिवार के काम का नुकसान होगा। अपनी जिम्मेदारी बेटे पर डालने की प्रवृत्ति तथा शिक्षा के प्रति संकीर्ण दृष्टि के कारण वे उसकी पढ़ाई का विरोध करते थे। आनंद के लिए शिक्षा गरीबी से निकलने का रास्ता थी, पर पिता यह बात नहीं समझते थे।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक का पिता खेती के लिए बेटे का श्रम चाहता था और पढ़ाई को व्यर्थ समझता था; इसी कारण वह उसकी शिक्षा के पक्ष में नहीं था।

त्वरित सुझाव: पिता के विरोध के दोनों कारण जोड़ें: खेत में बेटे की जरूरत और शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच।

13(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

यशोधर पंत की तीन चारित्रिक विशेषताएँ सोदाहरण समझाइए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में गुण के साथ उसके व्यवहार का उदाहरण देना आवश्यक है।
- यशोधर पंत के व्यक्तित्व में परंपरा, सादगी और आत्मीय सामाजिकता का मेल है।

चरण 1: परंपरानिष्ठ और संस्कारशील यशोधर पंत अपने पुराने संस्कारों और आदर्शों को गहरा महत्त्व देते हैं। किशनदा उनके लिए आदर्श व्यक्तित्व हैं और वे उन्हें बार-बार याद करते हैं। परिवार के आधुनिक तौर-तरीकों को वे आसानी से स्वीकार नहीं कर पाते। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ को पश्चिमी ढंग से मनाने की तैयारी भी उन्हें सहज नहीं लगती। इससे उनकी परंपरानिष्ठा और पुरानी पीढ़ी की जीवनदृष्टि स्पष्ट होती है।

चरण 2: सादगी और संयम उनका रहन-सहन सादा है और उन्हें अनावश्यक प्रदर्शन पसंद नहीं है। वे प्रतिष्ठा का आधार खर्चीली वस्तुओं या दिखावे को नहीं मानते। नई पीढ़ी की उपभोक्तावादी जीवनशैली से उनका असहज होना इसी स्वभाव का परिणाम है। बेटे की आर्थिक सफलता से जुड़ी नई जीवनशैली को भी वे अपनी पुरानी मान्यताओं की कसौटी पर देखते हैं।

चरण 3: सामाजिक और आत्मीय स्वभाव वे रिश्तेदारों, परिचितों और अपने पहाड़ी समाज के लोगों के प्रति आत्मीयता रखते हैं। लोगों से संबंध बनाए रखना तथा उनके सुख-दुख में भाग लेना उनके लिए महत्त्वपूर्ण है। वे केवल अपने छोटे परिवार तक सीमित होकर जीना नहीं चाहते। इसी सामुदायिक दृष्टि के कारण परिवार की नई पीढ़ी की व्यक्तिगत सुविधाओं पर केंद्रित सोच से उनका अंतर सामने आता है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर पंत परंपरानिष्ठ, सादगीप्रिय और सामाजिक आत्मीयता से भरे व्यक्ति हैं; किशनदा के प्रति श्रद्धा, दिखावे से दूरी और परिचितों से जुड़ाव इन गुणों के उदाहरण हैं।

त्वरित सुझाव: तीन गुण अलग-अलग लिखें और हर गुण के साथ कहानी का संबंधित व्यवहार जोड़ें।

13(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

ऐन की डायरी निजी कहानी न होकर तत्कालीन समाज का दर्पण है, कैसे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिगत अनुभव व्यापक ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियों को प्रकट कर सकते हैं।
- ऐन की डायरी में युद्ध, यहूदी उत्पीड़न और साधारण मनुष्य की असुरक्षा साथ दिखाई देते हैं।

चरण 1: निजी जीवन में इतिहास की उपस्थिति ऐन अपने अकेलेपन, पारिवारिक संबंधों और पीटर के प्रति लगाव का वर्णन करती है, किंतु इन अनुभवों की पृष्ठभूमि नाज़ी उत्पीड़न और द्वितीय विश्वयुद्ध है। यहूदी होने के कारण उसे परिवार सहित छिपकर रहना पड़ता है। इस प्रकार उसका बंद और भयपूर्ण जीवन केवल व्यक्तिगत परिस्थिति नहीं, उस समय यहूदियों की सामूहिक दुर्दशा का उदाहरण है।

चरण 2: युद्धकालीन समाज की दशा गोलीबारी, बमबारी, चोरी और पकड़े जाने का भय डायरी में बार-बार सामने आता है। अज्ञातवास में रहने वालों को छोटी-सी आवाज़ से भी अपनी सुरक्षा का संकट महसूस होता है। भोजन और आवश्यक वस्तुओं की कठिनाइयाँ युद्ध से प्रभावित जनजीवन का संकेत देती हैं। ये विवरण बताते हैं कि युद्ध केवल मोर्चे पर नहीं, घरों और सामान्य नागरिकों के जीवन में भी तबाही लाता है।

चरण 3: मानवीय संबंधों और सामाजिक प्रश्नों का चित्र डायरी में स्त्रियों की स्थिति, उनकी स्वतंत्रता और समाज में उनके योगदान पर भी विचार मिलता है। साथ ही छिपे हुए लोगों की सहायता करने वालों का साहस और संवेदना मानवता का दूसरा पक्ष दिखाते हैं। भय के बीच स्नेह, आशा, सहयोग और स्वतंत्र जीवन की इच्छा बची रहती है। इसलिए ऐन का निजी स्वर अपने समय के अनेक पीड़ित लोगों के अनुभवों को अभिव्यक्ति देता है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन की डायरी युद्ध, यहूदियों के उत्पीड़न, अभाव, भय, स्त्री-स्थिति और मानवीय सहयोग का चित्र प्रस्तुत करती है; इसलिए वह निजी कथा के साथ तत्कालीन समाज का दर्पण भी है।

त्वरित सुझाव: केवल ऐन की भावनाएँ न गिनाएँ; हर निजी अनुभव को युद्धकालीन सामाजिक परिस्थिति से जोड़ें।

13(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'जूझ' के लेखक के कवि बनने की कहानी का वर्णन कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-प्रतिभा प्रेरणा, अभ्यास और शिक्षक के मार्गदर्शन से विकसित होती है।
- आनंद के कवि बनने में प्रकृति और अपने परिवेश का अनुभव महत्त्वपूर्ण है।

चरण 1: कविता के प्रति आकर्षण आनंद के मराठी अध्यापक न.वा. सौंदलगेकर कविता को सुर, लय और हाव-भाव के साथ पढ़ाते थे। वे स्वयं कविता में रम जाते और विद्यार्थियों को भी उसका आनंद अनुभव कराते थे। उनका मधुर तथा प्रभावपूर्ण पाठ आनंद को बहुत अच्छा लगा। वह खेतों में काम करते हुए उन्हीं की तरह कविताएँ गाने और उनका अभिनय करने लगा। इस अभ्यास से कविता उसके दैनिक जीवन का सुखद हिस्सा बन गई।

चरण 2: स्वयं रचना करने का आत्मविश्वास सौंदलगेकर स्वयं भी कवि थे। उनके दरवाजे पर फैली मालती की लता पर रची कविता देखकर आनंद को लगा कि कविता के विषय अपने आसपास ही मिल सकते हैं। कवि कोई असाधारण, दूर की दुनिया का व्यक्ति नहीं होता। वह भी अपने गाँव, खेत, फसलों और जंगली फूलों पर कविता लिख सकता है। इस बोध ने उसे केवल दूसरों की कविताएँ गाने से आगे बढ़कर स्वयं रचना करने की प्रेरणा दी।

चरण 3: अभ्यास और शिक्षक का मार्गदर्शन वह पशु चराते और खेतों में काम करते समय तुकबंदियाँ करने लगा। पंक्तियों को गुनगुनाकर उनकी लय परखता और उन्हें लिख लेता था। वह अपनी रचनाएँ सौंदलगेकर को दिखाता; वे उसकी कमियाँ बताते और उसे प्रोत्साहित करते थे। नियमित अभ्यास, प्रकृति के निकट जीवन और शिक्षक की सहायता से उसकी कल्पना तथा अभिव्यक्ति विकसित हुई। इस

प्रकार उसका आरंभिक आकर्षण सृजन की क्षमता में बदल गया।

चरण 4: निष्कर्ष सौंदलगेकर के सस्वर कविता-पाठ से प्रेरित होकर आनंद ने आसपास के जीवन पर तुकबंदी शुरू की; निरंतर अभ्यास और शिक्षक के मार्गदर्शन ने उसे कवि बनाया।

त्वरित सुझाव: क्रम याद रखें: अध्यापक का कविता-पाठ, मालती की लता से आत्मविश्वास, फिर रचना-अभ्यास और सुधार।

14. 'जूझ' कहानी आधुनिक किशोर-किशोरियों को किन जीवन-मूल्यों की प्रेरणा दे सकती है ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना 'जूझ' शिक्षा पाने की इच्छा और प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष का महत्त्व स्पष्ट करती है।
- किशोर जीवन में परिश्रम, लक्ष्य के प्रति निष्ठा, आत्मविश्वास तथा योग्य मार्गदर्शन व्यक्ति की छिपी प्रतिभा विकसित करते हैं।

चरण 1: शिक्षा के प्रति लगन और संघर्ष कहानी का किशोर आनंद पढ़ना चाहता है, किंतु उसके पिता खेती के काम को पढ़ाई से अधिक आवश्यक मानते हैं। पढ़ाई छूटने पर भी आनंद अपनी इच्छा दबा नहीं देता। वह अपनी माँ और दत्ता जी राव की सहायता से दोबारा विद्यालय जाने का अवसर प्राप्त करता है। इससे आज के किशोर-किशोरियों को सीख मिलती है कि आर्थिक कठिनाई या पारिवारिक बाधा आने पर लक्ष्य छोड़ने के बजाय संवाद और उचित सहायता से रास्ता खोजना चाहिए।

चरण 2: श्रम, जिम्मेदारी और समय का सदुपयोग विद्यालय जाने की अनुमति मिलने पर भी आनंद को खेती के काम से छुट्टी नहीं मिलती। वह खेत का काम और पढ़ाई दोनों सँभालता है। रास्ते और खेत में मिलने वाले समय में भी वह पाठ तथा कविताएँ याद करता है। उसका आचरण बताता है कि सफलता केवल इच्छा से नहीं, नियमित परिश्रम और उपलब्ध समय के सदुपयोग से मिलती है। श्रम का सम्मान करते हुए अपने विकास के लिए समय निकालना आज भी आवश्यक जीवन-मूल्य है।

चरण 3: आत्मविश्वास, प्रेरणा और सृजनशीलता कक्षा में फिर प्रवेश करने पर आनंद को अपनी स्थिति और पहनावे के कारण संकोच होता है, फिर भी वह सीखना जारी रखता है। न. वा. सौंदलगेकर के भावपूर्ण कविता-पाठ से उसकी रुचि जागती है। वह स्वयं कविता बनाने का प्रयास करता है और शिक्षक का प्रोत्साहन पाकर अपनी प्रतिभा विकसित करता है। इससे प्रेरणा मिलती है कि दूसरों से तुलना कर हीनता पालने के बजाय अभ्यास किया जाए तथा अच्छे शिक्षक के मार्गदर्शन को स्वीकार किया जाए।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार 'जूझ' किशोर-किशोरियों को शिक्षा-प्रेम, धैर्य, आत्मसम्मान, श्रमनिष्ठा और रचनात्मकता की प्रेरणा देती है। आनंद का संघर्ष बताता है कि परिस्थितियाँ कठिन होने पर भी सजग प्रयास तथा सही सहयोग से व्यक्तित्व और भविष्य का निर्माण किया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: हर जीवन-मूल्य के साथ आनंद के जीवन की एक घटना जोड़ें; केवल गुणों की सूची देने से सोदाहरण उत्तर पूरा नहीं होता।

अथवा

14. 'सिल्वर वेडिंग' के आधार पर उन जीवन-मूल्यों की सोदाहरण समीक्षा कीजिए जो समय के साथ बदल रहे हैं । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू और नई पीढ़ी के व्यवहार द्वारा समय के साथ बदलती जीवन-दृष्टि दिखाई गई है।
- समीक्षा में परंपरा और आधुनिकता दोनों के उपयोगी तथा सीमित पक्षों को घटनाओं के आधार पर परखना आवश्यक है।

चरण 1: सादगी से उपभोग और प्रदर्शन की ओर यशोधर बाबू सादगी, मितव्ययिता और पुराने अनुशासन को महत्त्व देते हैं। इसके

विपरीत उनका बेटा भूषण नई आर्थिक सफलता और सुविधाओं वाली जीवन-शैली का प्रतिनिधि है। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर आयोजित पार्टी में आधुनिक ढंग का उत्सव और उपहार नई पीढ़ी की पसंद को व्यक्त करते हैं। उत्सव में अपनापन हो सकता है, किंतु जब बाहरी आयोजन व्यक्ति की इच्छा और सहजता पर भारी पड़ जाए, तब वह दिखावे का रूप भी ले सकता है।

चरण 2: पारिवारिक आत्मीयता और व्यक्तिवाद यशोधर बाबू किशनदा की स्मृतियों से जुड़े हैं। किशनदा के माध्यम से सहयोग, अपनेपन और दूसरों की सहायता करने का पुराना सामाजिक संस्कार सामने आता है। नई पीढ़ी निजी सुविधा, कमाई और अपनी पसंद को अधिक महत्त्व देती है। भूषण का पिता के लिए ड्रेसिंग गाउन लाना स्नेह का संकेत है, लेकिन पिता को सुबह दूध लेने जाते समय उसे पहनने का सुझाव देना पिता की दृष्टि में उसकी उपयोगिता को संकुचित कर देता है। यहाँ उपहार के साथ अपेक्षित संवेदनशील संवाद का अभाव दिखाई देता है।

चरण 3: बड़ों का अधिकार और पीढ़ियों का संवाद परिवार के उत्सव की योजना यशोधर बाबू को केंद्र में रखकर बनी है, फिर भी वे उसमें सहज भागीदार नहीं बन पाते। उनकी पत्नी और बच्चे बदलते समय के व्यवहार अधिक आसानी से अपनाते हैं, जबकि वे अनेक नई बातों को अपनी परिचित अभिव्यक्ति 'समहाउ इम्प्रॉपर' से देखते हैं। इससे स्पष्ट है कि बड़ों की निर्विवाद सत्ता का स्थान व्यक्तिगत स्वतंत्रता ले रही है। परंतु यशोधर बाबू का हर बदलाव पर संदेह करना भी दूरी बढ़ाता है; नए को समझने की उदारता दोनों पीढ़ियों में होनी चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष कहानी सादगी, सामाजिक सहयोग और पारिवारिक आत्मीयता के क्षरण के साथ स्वतंत्रता तथा आधुनिक सुविधाओं के बढ़ते महत्त्व को दिखाती है। इसका संकेत है कि परिवर्तन स्वीकार करते हुए संवेदना, सम्मान और संवाद बचाए जाएँ; परंपरा से जड़ लगाव या आधुनिकता का अंधानुकरण, दोनों संबंधों में दूरी ला सकते हैं।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में यशोधर बाबू और नई पीढ़ी दोनों की सीमाएँ दिखाएँ तथा हर मूल्य को कहानी की निश्चित घटना से स्पष्ट करें।